UNIVERSAL LIBRARY

OU_180781

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82/V31Ra Accession No. G.H 1992

Author वर्मा, वृन्दावनलाल

Title राखी की लाज / 1947

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल एल. बी.
मयूर-प्रकाशन, झाँसी ।

प्रथमावृत्ति—१९४७

अनुवाद और चित्रपट निर्माण आदि के सर्वाधिकार लेखक के अधीन हैं ।

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक—
स्वाधीन प्रेस, झांसी ।

परिचय

विन्ध्यखण्ड में क्या हिन्दुस्थान भर में सावन बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। बहिन भाई को राखी बाँधती है और भाई उसको कुछ देता है। असल में परम्परा उस राखी के डोरे द्वारा बहिन के सिर पर भाई की रक्षा का हाथ रखवा देने की है, जो कभी न हटना चाहिए। प्रति वर्ष सावन की पूनों को इस बन्धन की आवृत्ति होती है। जब कोई लड़की या स्त्री किसी ऐसे पुरुष को राखी बाँध देती है जो उसका भाई नहीं है, तब वह राखी उन दोनों के बीच में भाई-बहिन का सम्बन्ध स्थापित कर देती है और इस बहिन की रक्षा का भार उस भाई पर आ जाता है। अधिकांश पुरुष इस भार को पैसे दे दिवाकर सिर से उतार देते हैं। और करें भी क्या? इतनी राखियां हाथ में पड़ जाती हैं कि समस्या का हल परम्परा ने पैसे या चाँदी के दान द्वारा सहज कर दिया है।

परन्तु आवारा मेघराज की गांठ में, राखी बँधने के समय पैसे न थे, अथवा, वह राखी बाँधने वाली अपनी बहिन को पैसों से बढ़कर कुछ और देना चाहता था,—और उसने दिया।

सन् १९४१ में झांसी ज़िले के सकरार नामक गाँव में एक डाका पड़ा। वहाँ के निवासियों ने लाठी से बन्दूकों का मुकाबिला किया और ठोक-पीटकर डाकुओं को भगा दिया। गिरोह नामी सरदार शेरसिंह का था। गिरोह में एक आदमी था जिसने एक लड़की की रक्षा करने में अपने गिरोह का सारा उद्यम बिगाड़ दिया। बरवासागर में विख्यात धनी सेठ मूलचन्द पर सन् १९२२ में डाका पड़ा था। डाकुओं ने थाने को घेर लिया और सेठ के घर में बाहर से नसेनी लगाकर घुस पड़े। बाहर का दरवाज़ा भीतर से खोलकर अपने अनेक साथियों को भीतर कर लिया। वे लोग सेठ मूलचन्द की नवविवाहित पत्नी की ओर लपके। एक डाकू

बन्दूक लेकर उसके पास खड़ा हो गया। बोला, 'खबरदार, इस बहू की ओर मत आना।'

डाकू मजबूर हो गए। उन्होंने डाका तो डाला, परन्तु उस उदार-हृदय डाकू की रखवाली के कारण वे उस स्त्री के पास नहीं फटक सके। मै उन दिनों सरकारी वकील था। मैंने सेशन्स में उस मुकद्दमे को किया था। सेठ मूलचन्द ने उस रक्षक डाकू के विषय में यही बयान दिया था। वह डाका भी अन्त में विफल रहा। सब का सब माल दूसरे ही दिन बेतवा नदी की चट्टानों की ओट में छिपे हुए डाकुओं से आर्म्ड पुलिस ने पकड़ लिया।

चिरगाँव के निकटवर्ती गाँव भरतपुरा में मेरे मित्र पं० फूलचन्द पुरोहित एक प्रबल व्यक्ति थे। वे शत्रु और मित्र—दोनों प्रकार से—प्रचण्ड थे। उनके गाँव में एक बरात आई। वर के प्रति लड़की और उसके पिता की भी विरक्ति थी, परन्तु वे दोनों परिस्थिति के कारण विवश हो गए थे। फूलचन्द को मालूम हो गया। उन्होने तुरन्त बारात को लौटाया—लौटाया नहीं, वास्तव में गाँव से भगा दिया। उसी रात दूसरे गाँव से एक अच्छा और अनुकूल वर खोजा और दूसरे दिन ब्याह करवा दिया!

बांसी गाँव में १९४४ में प्लेग और १९४५ में हैजे का प्रकोप हुआ। डॉक्टरों ने भी कुछ किया, परन्तु वहां के थोड़े से उत्साही स्वयंसेवकों ने बहुत कुछ किया। बांसी का नाला एक आकर्षण की वस्तु है। उसके पुल से नीचे की ओर दोनों किनारो पर सघन वृक्षावलि है। यह स्थान ललितपूर से उत्तर की ओर १२ मील है और झाँसी से दक्षिण की ओर सागर सड़क पर लगभग ४५ मील। मैं वहाँ होकर अनेक बार निकला हूँ, और कभी कभी उस नाले के पास ठहरा हूँ। डाकू भी कई बार उस नाले के पास ठहरे हैं।

१९४६ की जन्माष्टमी की रात को ओर्छा राज्य के उबौरा ग्राम में एक दुखान्त घटना घट गई। गर्मियों में एक बरात वहां आई थी। एक लड़की का उस बरात के किसी सजातीय युवक से प्रेम हो गया। बाप को लड़की की इच्छा भी मालूम हो गई, परन्तु उसने हठपूर्वक आतुरता के साथ लड़की का ब्याह किसी दूसरे पुरुष के साथ कर दिया। उस लड़की को अपने घर ले जाने के लिए वह पुरुष जन्माष्टमी के दिन आया। लड़की ने रात को कुएँ में गिरकर अपनी जान दे दी।

एक घटना मऊरानीपूर में सन् १९४२ में इसी प्रकार हुई थी—उसमें लड़की तो विवश अपनी ससुराल चली गई, परन्तु जिस सजातीय लड़के से उसका प्रेम हो गया था और जिसके साथ ब्याह नहीं हो पाया, वह घर से ऐसा निकला कि उसका कभी पता न लगा।

हमारे देश में शायद, इस तरह की दुखान्त घटनाएँ और अधिक न हों। इसी आशा पर, मैंने इन घटनाओं के मूल तत्वों को एक गाँव और एक सयय में गूँथ दिया है और घटना को सुखान्त कर दिया है। एक भावना और भी थी—सावन के राखीबन्द भाई-बहिन की कथा को दुखान्त क्यों बनाया जाय ?

मै राखी की सुन्दर प्रथा के चिरकाल तक जीवित रहने का आकांक्षी हूँ। स्त्री को शीघ्र ही आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी और स्त्री तथा पुरुष बराबरी पर आयँगे, परन्तु स्त्री को सम्मान की दृष्टि से देखने का यदि यह एक अतिरिक्त साधन—रक्षाबन्धन—समाज में बना रहे तो क्या कोई हानि होगी ?

कजरियों इत्यादि के जो गीत विन्ध्यखण्ड में प्रचलित हैं उनको मैंने ज्यों का त्यों रख दिया है। उनमें जो सजीवता हमारी ग्रामीण जनता पाती है वह मेरे—मैं छन्दकार हूं भी नहीं—या किसी और के बनाए गीतों में शायद जनता न पाती।

कजरियों की पूजा के समय जो कहानी बुन्देलखण्ड में स्त्रियाँ हँस हँसकर कहती हैं उसमें एक कुतूहल है – और नरशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए कुछ खोज की सामग्री भी, इसलिए मैंने उसको भी दे दिया है।

इस नाटक को रङ्गमञ्च पर खेलने में यदि खेलने वालों को कोई कठिनाई अवगत हो तो उसकी ज़िम्मेदारी मेरी, और यदि सुविधा जान पड़े तो वह खेलने वालों का कौशल होगा।

झाँसी
२९–८–१९४६

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

सोमेश्वर—एक पढ़ा-लिखा ग्रामीण युवक।

चाँदखाँ—करीमुन्निसा का भाई, उसी गांव का जिसका सोमेश्वर है।

बालाराम—गांव का एक धनाढ्य व्यक्ति, चम्पा का पिता।

मेघराज—सपेरा।

लुटेरे, लुटेरों का सरदार, सिपाही, थानेदार, जमादार, डाक्टर, नौकर, लड़के इत्यादि।

स्त्री—

चम्पा—बालाराम की लड़की।

करीमुन्निसा—चम्पा की पड़ोसिन लड़की, चांदखां की बहिन।

स्त्रियां, लड़कियाँ इत्यादि।

बांसी (ग्राम)—ललितपूर से १२ मील उत्तर।

राखी की लाज

पहला अंक

पहला दृश्य

[सवेरा हुए कुछ देर हो गई है। परन्तु, बदली के कारण सूर्य नहीं दिखलाई पड़ रहा है। ठंडी हवा चल रही है। सावन सुदी चौदस का दिन है। बाँसी नामक गाँव के बीच में होकर जो चौड़ी पक्की सड़क निकली है वह लहर खाकर आगे एक नाले के ऊपर होकर गई है। नाले पर पुल बँधा है। यह पुल बाँसी से नीचे थोड़ी दूर है। पुल से नीचे की तरफ़, थोड़ी दूर हटकर, नाले के दोनों किनारों पर सघन वृक्ष हैं। वहाँ पर पानी गहरा है। चारों ओर हरियाली है। पुल के आगे इस पक्की सड़क से फूटकर एक कच्चा मार्ग जंगल और पहाड़ियों में होकर एक गाँव को गया है जो

बाँसी से दो कोस दूर है। इस कच्चे मार्ग से पक्की सड़क की ओर बाँसी जाने के लिए मेघराज सपेरा आ रहा है। मेघराज लगभग २० साल का, साँवले रंग का, सुरूप युवा है। चेहरा भरा हुआ, आँखें बड़ीं, पुतलियाँ कालीं, नाक सीधी, छोटी छोटी मूछें और हलकी दाढ़ी जिसके छोटे छोटे छल्ले रचे गए हैं। गले में मालाएं—रुद्राक्ष और लाल नीले काँच के बड़े गुरियों की। हाथ में लोहे के कड़े। भोहों के बीच में तेल में मथी हुई कालोंच का आड़ा टीका और चौड़े माथे पर सिन्दूर का चकचका त्रिपुण्ड। कान में पीतल के बाले। उँगलियो में लाल काँच की जड़ी हुई पीतल की अँगूठियाँ और तामें के छल्ले। सिर पर गेरुए रंग का बड़ा साफ़ा इस तरह बाँधे हुए है कि सामने से लम्बे केशों की मोड़ झाँकती सी दिखलाई देती है। गेरुए रंग का लम्बा कुर्ता और उसी रंग की धोती। जूते देशी। कन्धे पर छोटी सी बेंगी जिसके दोनो सिरों पर बाँस की छोटी छोटी पेटियाँ। एक कन्धे से झोला भी लटक रहा है। जिस हाथ से बेंगी साधे है उसमें लम्बी तूम्बी वाला दुनला महुअर बाजा लिए है और दूसरे हाथ में एक मोटा डण्डा। बाँसी की ओर से, पक्की सड़क को छोड़कर, इसी कच्चे मार्ग पर एक मनुष्य 'सावनी' लिए हुए आ रहा है। सावनी का सामान—राखी, नारियल, मिठाई इत्यादि लिए हुए वह जंगल वाले गाँव को जा रहा है। सामने सपेरे को देखकर और असगुन समझ कर वह ठमठमा जाता है। सपेरा मुस्कराता है। वह मनुष्य और भी सहम जाता है। सपेरा उसके पास आकर खड़ा हो जाता है।]

सपेरा—राम, राम। क्यों ठहर गए भाई ? कहां जा रहे हो ?

नाई—जा रहा हूं—एक गांव को जा रहा हूँ।

सपेरा—बैठो न इस पेड़ के नीचे। तमाखू पीलो। बांसी कितनी दूर है ?

नाई—यह रही पास ही। पहले यहां कभी नहीं आए क्या ?

सपेरा—न।

[सपेरा बेंगी एक ओर रख देता है और बैठकर चिलम-तमाखू निकालता है। नाई भी उसके पास आ बैठता है। सपेरा दियासलाई से आग बनाकर चिलम तैयार करता है। दोनों तमाखू पीते है।]

नाई—आप कहां से आ रहे हो ?

सपेरा—गुरू गोरखनाथ के चेले मछन्दरनाथ, उनके चेले बवंडर-नाथ, उनके मार्तण्डनाथ, उनके........

नाई—नाथ जी, मैंने पूछा आप कहां से आ रहे हो ?

सपेरा—मैं गुरू गोरखनाथ के चेला-वंश में हूं। कलकत्ता, बम्बई, नागपूर, कानपूर, झांसी आंसी घूमता घामता आ रहा हूँ। चाहे जैसे नाग के डसे हुए को चौकस चार घड़ी में गुरुमंत्र से अच्छा कर देता हूं। गड़ा हुआ धन दिखला देता हूँ। भूत प्रेत बाधा को हटा सकता हूँ। चाहे जैसी बीमारी को छूमंतर कर देता हूँ। तुम कौन हो, कहां जा रहे हो ?

नाई—मैं नाई हूं। एक गांव सावनी लिए जा रहा हूँ।

सपेरा—सावनी क्या ?

नाई—इसी साल हमारे गांव का एक लड़का उधर के गांव में ब्याहा है। लड़की वाले के यहां सावन का सामान—नारियल, राखी, बांसुरी, भौंरा, भौंरी, बनाशे-बताशे—लिए जा रहा हूँ। इसी को सावनी कहते हैं।

सपेरा—गांव में बड़े बड़े लोग बसते होंगे ?

नाई—हां, हां, कई बड़े आदमी हैं।

सपेरा—सबसे बड़ा कौन है ?

नाई—बालाराम ! जब से नया युग आया और लेनदेन बन्द हुआ तब से बालाराम अपना धन नहीं बढ़ा पा रहे हैं, वैसे उनके पास पुराना रुपया-पैसा गहना-पत्ता बहुत है। नामी लखपती हैं।

सपेरा—मैं गांव में जाकर अपना खेल और जादू का ज़ोर दिखलाऊँगा। देखूंगा तुम्हारे गांव के बड़े आदमी क्या देते हैं?

नाई—आप तो कहते थे हम गड़ा हुआ धन देख सकते हैं! फिर आपको जादू दिखलाने की क्या ज़रूरत?

सपेरा—हां, हां, देख सकते हैं, परन्तु अपने लिए नहीं। गुरू ने बर्ज रक्खा है। इसलिए देखकर भी हम पराया धन नहीं उखाड़ते।

नाई आप कल रहेंगे? हमारे यहां कल हाट लगेगी; मेला जुड़ेगा। मैं भी कल सबेरे तक लौटकर आ जाऊँगा और आपका जादू देखूँगा। मैं आपको अच्छे घरों का पता ठिकाना दूँगा। मुझको सदा पेट में पीड़ा रहती है, आपसे उसका इलाज करवाऊँगा। आपका नाम क्या है नाथ जी?

सपेरा—नागनाथ, सांपनाथ, मेघराज; बादलराज; हमारा नाम क्या? पवन के साथ आते और चले जाते हैं।

नाई—मैं अब जाता हूं। कल आपसे अवश्य मिलूंगा। बांसी में ठहरिएगा। बड़ा गांव है।

सपेरा—हम लोग रात को गांव में नहीं ठहरते, जङ्गल में डेरा डालते हैं। कल जङ्गल से गांव में आजायंगे, मिलेंगे।

[नाई का प्रस्थान। मेघराज पक्की सड़क पर आकर पुल की ओर जाता है। पुल के पास से बांसी गांव उचाई पर दिखाई पड़ता है। मेघराज डंडे को बेंगी के सिरे पर सुतली से लटका लेता है और अपना 'मोहन बाजा' बजाता है। नाले के पेड़ों की झुरमुट से एक देहाती का प्रवेश। देहाती चेहरे पर ढाटी चढ़ाए हुए है। उसको

देख कर मेघराज उसकी ओर घूरता है। देहाती उसके पास आकर ढाटी ज़रा उघाड़ता है]

मेघराज—*(चौंककर ज़रा सा पीछे हटता है)* सरदार !

सरदार—हां, मैं ही हूं। तुमसे एक बात कहना भूल गया था। पता लगाना गांव में कितने हथियार हैं, कैसे हैं, और जिन घरों में हथियार हैं। वे घर एक दूसरे से कितने अन्तर पर हैं, विशेषकर उस घर से जिस पर हम लोगों को पहुंचना है।

मेघराज—बहुत अच्छा। और कुछ ?

सरदार—और तो कुछ नहीं, केवल यह कि भङ्ग मत पीना और दूसरे सपेरों से मुठभेड़ हो जाय तो उलझ मत जाना।

मेघराज—कठिन है सरदार। तो भी प्रयत्न करूँगा।

सरदार—तुम्हारी इनाम और हमारे दल में तुम्हारी आगे की बढ़ती इसी सावधानी पर निर्भर है।

मेघराज—अभी आप मेरा विश्वास नहीं करते ?

सरदार—विश्वास करते हैं तभी तो तुमको ही बारीक काम के लिए भेजा है।

मेघराज—यह मेरे मन को रुचता है; करके दिखलाऊंगा।

सरदार—पूरे दल के साथ आने के पहले मैं स्वयं कल इस गांव का एक चक्कर तुम्हारे साथ काटूंगा। सन्ध्या के पहले लौट आना। जाओ।

[देहाती वेश वाला 'सरदार' नाले के पेड़ों में विलीन हो जाता है और मेघराज महुअर बाजा बजाता हुआ बांसी गांव की ओर जाता है]

दूसरा दृश्य

[स्थान—बांसी गांव के बीच में होकर निकली हुई चौड़ी सड़क। सड़क के दोनो ओर नीम के पेड़। मकान इकमंजिले और दुमंजिले हैं। सड़क पर कुछ छोटे लड़के बांसुरी बजाते हुए घूम रहे हैं। कुछ भौंरी और चकरी से खेल रहे हैं। नीम की डालों पर झूला डाले हुए स्त्रियां और लड़कियां झूल रही हैं। एक झूले पर दो लड़कियां सावन गा रही हैं। एक चम्पा है और दूसरी करीमुन्निसा। चम्पा माथे पर बिन्दी लगाए है, साड़ी पहिने है और पैरों में पायल। गले में सोने के आभूषण। आयु लगभग १५ साल। गोरा रंग, आंखें बड़ी, आकृति सुन्दर। करीमुन्निसा भी लगभग इसी आयु की। गोरी और सुन्दर। करीमुन्निसा की साड़ी रंगबिरंगी, लहरियादार है। पैरों में छड़े। गले में भी कुछ गहनें।]

दोनों लड़कियां—*(सावन गाती हैं।)*

एरी सखी सैंया जोगी हो गए,
हो गए मोरे महाराज, एरी सखी सैंया जोगी हो गए।
सावन की निस अंधियारी औ रिमझिम बरसत मेह,
भूम हरी सब हो गई रे, वन में कूकत मोर।
सुनो सखी सैंया जोगी हो गए।

[गीत की समाप्ति पर मेघराज का महुअर बाजा बजाते हुए प्रवेश। उसके आते ही लड़के उसको घेर लेते हैं तथा स्त्रियां और लड़कियां झूला झूलना बन्द कर देती हैं। वह उन दोनों लड़कियों के निकट जाकर अपनी पेटियां उतार देता है और घूम घूम कर बाजा बजाता है। बाजा बजाते हुए वह उन दोनों लड़कियों को भी देखता जाता है। लड़कों, लड़कियों और पुरुष स्त्रियों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है]

करीमुन्निसा—चम्पी, देख तो मुआँ कैसी आँखें फाड़-फाड़ कर ताक रहा है।

चम्पा—तुम्हें देख रहा है करीमन वह; मुझको नहीं देख रहा है।

करीमन—ठूंसा दूँगी मुँह पर। देखती नहीं, अबकी बार तुम्हारे ऊपर कैसी पुतलियां ढलका रहा है।

चम्पा—उसका बाजा सुनो करीमन; उसका खेल देखो। आंखों से क्या सरोकार है?

[सोमेश्वर और चाँदख़ां का प्रवेश। दोनों युवा। लगभग १६ वर्ष के। दोनों के रेख आ रही है। दोनों हृष्ट पुष्ट हैं। दोनो कुर्ता पैजामा पहिने हैं। सोमेश्वर चोटी रखाए है। चांदख़ाँ स्वभावत: चोटी नहीं रक्खे है। सोमेश्वर के ओठ पर रेख केवल सिरों पर बनी कटी है। चाँदख़ां की रेखके सिरे पतले और नीचे की ओर ज़रा झुके हुए हैं। उसकी रेख नाक के नीचे उस्तरे से बनी हुई है। भीड़ को चीर कर ये दोनों सपेरे के पास आते हैं। सोमेश्वर को देखकर चम्पा करीमन के कन्धे के पीछे ज़रा सी ओट ले लेती है।]

करीमन—भैया आ गए।

चम्पा—घर चलें? शायद वे कुछ कह न उठें।

करीमन—वाह! ऐसा तमाशा छोड़कर घर में जा घुसें! क्या कहेंगे? वे भी तो खेल देखने आए हैं। इसकी पेटी में कोई अजगर होगा, चम्पी।

मेघराज—*(बाजा बन्द करके)* खास गुरू मछन्दरनाथ, पुरन्दरनाथ, भभूंदरनाथ के चेलों के घराने का हूँ। चाहे जैसा सांप बात की बात में पकड़ लूंगा। जादू से उसको सुला दूंगा। मन्त्र से बीमारियों को अच्छा कर दूँगा। हैज़ा, प्लेग, बुखार, कण्ठमाल, चक्कर, आधासीसी, दमा सब चुटकियों में अच्छे कर सकता हूँ।

सोमेश्वर—और क्या क्या कर सकते हो ?

(सोमेश्वर और चम्पा एक दूसरे को देखते हैं)

मेघराज—बिछुड़ों को मिला सकता हूँ। मन की चाहें पूरी करा सकता हूँ·····

चाँदखाँ—बाजीगरी के भी खेल कर सकते हो ?

मेघराज—वह तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।

चाँदखाँ—दिखलाओ। पैसे मिलेंगे।

मेघराज—पेट के लिए तो सब करता ही हूँ बाबा। किसी के घर में सांप हो तो बतलाओ। चाहे जैसा भुजङ्ग हो, अभी पकड़ लाऊं।

चाँदखाँ—तुम्हारे लिए सांप कहा तलाश करें ? कोई बढ़िया से खेल दिखलाओ।

मेघराज—बहुत अच्छा।

[मेघराज गुठली से आम का पौधा जिसमें आम लगे हुए हैं, दिखलाता है। सरसों से सरसों के पौधे, मूली के बीज से मूलियां और इसी प्रकार की चीज़ें निकाल कर दिखलाता है।]

सोमेश्वर—यह सब हाथ की सफाई है। कोई जादू टोना नहीं है।

मेघराज—करके दिखलाइए तब जानूँ।

चाँदखाँ—करके भी दिखला सकते हैं, नाथ जी। हमारे बांसी गांव को साधारण देहात न समझना। यहां पढ़े लिखे स्त्री पुरुष भी रहते हैं जो नाना प्रकार के खेल कूद करते रहते हैं।

मेघराज—तो मेरा ऐसा खेल देखिए जिसको देखकर बड़े बड़े पढ़े लिखे स्त्री पुरुष भी दङ्ग रह जायं—अचम्भे में डूब जायं। बुलाइए ऐसे देखने वालों को।

सोमेश्वर—बहुत से खड़े हैं। आरम्भ करो और इनाम लो।

मेघराज—जितना बड़ा और बढ़िया खेल मैं दिखाऊंगा, इनाम में देने के लिए उतने पैसे आपके गांव में न होंगे।

चाँदखां—गांव में तो नाथ तुम्हारी तौल का सोना एक ही घर में होगा। क्या खेल है, ज़रा मैं भी सुनूँ?

मेघराज—आपके गांव में कितनी बन्दूक़ें हैं?

चाँदखाँ—कई हैं। बोलो, काहे के लिए चाहिए?

मेघराज—पहले उनकी गिनती बतलाइए, फिर कारण मैं बतला दूंगा। खेल के लिए चाहिए, अपने जादू का प्रभाव दिखलाऊंगा।

चाँदखां—हमारे गांव में पांच बन्दूकें हैं। बोलो, उनका क्या खेल खेलोगे?

मेघराज—कारतूसी हैं या टोपीदार?

चाँदखां—दो कारतूसी हैं और तीन टोपीदार।

मेघराज—एक बन्दूक मैं लूँगा जो ख़ाली होगी। चारों दिशाओं में चार बन्दूक वाले खड़े करिए। वे बन्दूक़ें भर कर मेरे ऊपर दागें। मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। उन सब बन्दूक़ों की गोलियां मेरी बन्दूक़ की नाल में आ जावेंगी! जय गुरू की।

चाँदखाँ—अच्छा! ऐसा होगा! लाऊँ बन्दूक़ें?

सोमेश्वर—रहने भी दो चंदू, यदि ये मारे गए तो पकड़ धकड़ होगी हम लोगों की।

मेघराज—(*मुस्कराकर*) मारा नहीं जा सकता। लाइए बन्दूकें। कितनी दूर हैं यहां से?

चाँदखाँ—गांव के भीतर, यहां से लगभग एक फर्लाङ्ग की दूरी पर।

एक लड़का—हम बतलावें? एक हमारे मास्टर साहब के घर में है, और—और अरे! भूल गए! (*इसी समय नाई का प्रवेश*)

नाई—मैं बतला सकता हूँ।

मेघराज—(*चाँदख़ां और सोमेश्वर से*) आप लाइए साहब।

चाँदख़ाँ—आओ सोमेश्वर, देखें ये नाथ जी कितने पानी में हैं।

सोमेश्वर—व्यर्थ है। (*चाँदख़ां उसका हाथ पकड़कर ले जाना चाहता है*) बेकार है चन्दू।

(*चाँदख़ां उसको ले जाता है*)

मेघराज – देखो भाइयो। (*स्त्रियों और लड़कियों के प्रति*) तुम भी देखो बाइयो। बन्दूकों के आने पर या तो बच ही जाऊँगा या छिदकर मर जाऊँगा, तबतक नाग नचाने का मेरा तमाशा देख लो।

[*मेघराज एक पेटी खोलता है। उसमें से एक बड़ा काला साँप फैला हुआ फन निकालता है। मेघराज बाजे को बजा बजाकर उसे विविध प्रकार से खिलाता है*]

चम्पा—करीमन, चन्दू भैया शायद स्वयं बन्दूक चलावेंगे। यह बिचारा मारा जायगा और सब लोग पकड़े जावेंगे। मुझसे तो यह खेल नहीं देखा जायगा। चलो घर चलें।

करीमन—घर कौन कोस दो कोस पर है। जब चाहेंगे चार डग नहीं जा पावेंगे? वृथा भय खा रही हो ज़रा देर देख भी लो। ऐसा अनोखा खेल तो न कभी देखा और न सुना।

(*बन्दूकें लिवाए हुए चाँदख़ाँ और सोमेश्वर का प्रवेश*)

मेघराज—खाली हैं या भरी हुई? देखूँ।

चाँदख़ाँ—खाली हैं।

(*मेघराज एक एक करके बन्दूकों की जाँच करता है*)

मेघराज—आपके यहां कल मेला भरेगा?

सोमेश्वर—हां।

मेघराज—बहुत भीड़ भाड़ होगी ?

सोमेश्वर—हां।

मेघराज—कबतक रहेगी !

सोमेश्वर—मुँजरियों के खोटने के बाद संध्या के पहले मेला तितर बितर हो जायगा।

मेघराज—तब इस खेल को कल अधिक लोगों के सामने दिखलाऊँगा। (*मुस्कराकर*) मरना ही है तो बहुत लोगों के सामने क्यों न मरूँ ? यदि बच गया तो पैसे भी कल बहुत मिलेंगे।

चाँदखां—आ गए न साला टूली पर ! यदि ऐसा ही था तो बंदूकें क्यों मंगवाई !

मेघराज—(*हँसकर*) यह देखने के लिए कि किस बन्दूक से कैसी गोली छूटेगी।

चांदखाँ—(*कुछ चिढ़कर*) मुफ्त में परेशान किया।

मेघराज—(*मुस्कराकर*) सोचिए तो साहब, संसार में ऐसा कौन होगा जो थोड़े से पैसों के लिए आसानी से अपना खोपड़ा चटकवा दे ? मैं कल आऊँगा—कल अपना पूरा खेल दिखलाऊँगा। पैसे तैयार रखिएगा।

चाँदखाँ—बहुत हेकड़ी मारोगे तो नुकसान उठाओगे, नाथ।

मेघराज—हम लोग भिखमङ्गों की तरह घिघिया-पतिया कर पैसा नहीं कमाते।

(*दौड़ते हुए एक बालक का प्रवेश*)

बालक—(*हाँफते हुए*) बालाराम दादा के यहां कोठे में एक बड़ा भारी काला सांप आगया है !

(*चम्पा चीखती है*)

मेघराज—मैं देखता हूँ। घबराओ मत। उसको मारना नहीं। मैं अभी पकड़ता हूं। *(आँख मूँदकर ऊपर की ओर मुँह करता है और एक क्षण के लिए ओठों को बिरबिराता है)* जय गुरू की। एक घड़ा लाओ।

(एक बालक जाकर मिट्टी का घड़ा ले आता है और मेघराज को देता है)

मेघराज—मुझको वह घर दिखलाओ। भीतर कोई साथ मत आना।

सोमेश्वर—वह रहा घर पास ही जहां लड़कियां झूला डाले थीं।

[मेघराज अपनी पेटियों के सामान को यथावत् रखकर घड़ा और अपनी लाठी लेकर बालाराम के घर मे जाता है और साँप को पकड़ कर घड़े में बन्द करके लौट आता है। जैसे ही मेघराज घड़े के पारे को उघाड़ कर घड़े में से उठे हुए साँप के फन को दिखलाता है जनता इधर उधर तितर बितर होती है। मेघराज साँप को घड़े में लाठी से ढकेल कर पारे से बन्द कर देता है, घड़े के मुँह को एक कपड़े से बाँध देता है; और घड़े को एक पेटी में बन्द कर देता है]

मेघराज—*(चाँदखाँ और सोमेश्वर से)* लोग अपने माल को अपनी ही भाषा में बखान कर अच्छे दामों में बेचते हैं। मैं अपनी कठोर सौदा को यदि हेकड़ी की भाषा में बखानता हूँ तो क्या बुरा करता हूं? *(मुस्कराकर)* आप मेरा सिर भञ्जन करने के लिए बन्दूकें उठा लाए और मैंने इनाम का ठीक ठहराव तक नहीं किया!

सोमेश्वर—तुमने सांप पकड़ने में विलक्षण चतुराई और हिम्मत की, पर......

चाँदखाँ—पर बन्दूक़ के मामले में चतुराई या हिम्मत काम न देगी। पोल खुलकर ही रहेगी।

मेघराज—*(हँसकर)* कल देखिएगा। मेले में पुलिसवाले भी आयँगे?

चाँदखाँ—शायद आवें। क्यों? उनका कोई डर है?

मेघराज—(*मुस्कराकर*) बिलकुल नहीं। मैं उनको लिखकर दे दूंगा कि यदि बन्दूक़ के खेल में मारा जाऊँ तो आप लोगों का कुछ न बिगड़े। वे लोग क्या यहीं टिकेंगे?

चाँदखाँ—नहीं। मेले के खतम होने पर वे लोग भी चले जायँगे। क्यों?

मेघराज—वैसे ही पूछा। अब मैं बस्ती में घूमकर लोगों को नाग के दर्शन करा आऊँ। मुझको यहां के खेल की इनाम मिलनी चाहिए। वह देखो लोग मुँह चुराकर खिसकने लगे!

[*सोमेश्वर, चाँदखाँ इत्यादि उसके कपड़े पर पैसे डालते हैं। पैसे कई रुपए के हो जाते हैं। मेघराज उनको इकट्ठा करके बस्ती के भीतरी भागों में जाने को होता है।*]

सोमेश्वर—ये बन्दूक़ें जहां की तहां पहुंचादो।

चाँदखाँ—चलो।

नाई—चलिए नाथ जी, मैं आपको ऐसे घर दिखलाऊँगा जहां आपको बहुत पैसे मिलेंगे।

[*मेघराज बेंगी पर पेटियाँ लादे बाजा बजाता हुआ बस्ती के भीतर जाता है। साथ में वह नाई और मुँह बनाते चिढ़ाते बालक इत्यादि। दूसरी ओर से चाँदखाँ और सोमेश्वर का प्रस्थान*]

करीमुन्निसा—चन्दू दादा उस बिचारे से नाहक़ उलझ गए। पेट के लिए लोग तरह तरह की बातें करते ही हैं। मैं जानती थी कि बन्दूक़ चलाने की घड़ी नहीं आवेगी। कोरा हँसी-ठट्ठा था।

चम्पा—मैं तो डर गई थी। और, जब उसने इतना बड़ा सांप पकड़ा तब तो मैं बेसुध ही होगई होती। चलो झूला झूलें। बड़ा वीर है वह नाथ।

करीमुन्निसा—चलो।

तीसरा दृश्य

[स्थान—जंगल, बाँसी से लगभग चार मील दूर। समय चौथा पहर। दस बारह मनुष्यों का तलवारें बन्दूकें लिए हुए प्रवेश। उनके चेहरे खुले हुए हैं। कपड़े खाकी पहिने हैं। आयु २० और चालीस के बीच में है। उन लोगों में वह सरदार भी है जो मेघराज को नाले के पास झुरमुट में मिला था। दूसरी ओर से मेघराज का प्रवेश। वह अब भी गेरुए कपड़े पहिने है और पहले जैसा त्रिपुण्ड लगाए है। परन्तु पेटी या बाजा नहीं लिए है।]

मेघराज—मैं आहट लेते लेते कठिनाई से आ पाया हूँ। जिस स्थान पर मिलने के लिए कहा था उससे आप लोग कुछ भटक आए हैं।

सरदार—हमने पहाड़ पर से तुमको भटकते हुए देखा इसलिए यहां उतर आए। तुम्हारा सामान कहां है ?

मेघराज—इसी जङ्गल में छिपाकर रख आया था। एक नया साप पकड़ा था उसको छोड़ दिया क्योंकि उसका विषैला दांत निकालने में देर लगती। फिर आप लोगों को ढूढ़ने के लिए निकल पड़ा। जब न मिले तो सामान लाने के लिए लौट पड़ा। भटक गया। याद नहीं पड़ता सामान कहां रख दिया था। पांच-छः रुपए के पैसे थे। सब गए।

सरदार—कोई बात नहीं। बहुत हो जायगा। बांसी का समाचार सुनाओ।

मेघराज—बांसी में धन-सम्पत्ति वाले कई घर हैं। उनमें बालाराम लखपती है। सड़क के किनारे ही रहता है। उसके पास ही एक मुसलमान की गृहस्थी है। वह भी धन वाला है। गांव में पांच बन्दूकें हैं—दो कार्तूसी तीन टोपीदार। उनमें से बढ़िया कोई नहीं। पांचों बन्दूकें एक ही मुहल्ले में पास पास के घरों में हैं। स्त्रियां और लड़कियां शृङ्गार और गायन

बहुत पसन्द करती हैं। पुरुष कुछ ढीलेढाले से जान पड़े। कल मेला है पुलिस वाले भी आयंगे।

सरदार—स्त्रियां कब तक गाती रहेंगी? पुलिस वाले किस थाने से आयँगे?

मेघराज—यह मैंने नहीं तलाश किया। स्त्रियां आठ नौ बजे रात तक गा बजा कर सो जायंगी। पुलिस वाले अपने थाने को लौट जायंगे

सरदार—यह भी काम की बात थी, ढूंढ़ खोज करनी चाहिए थी गांव की गलियां देख लीं?—कहां से किस ओर जा सकेंगे यह खूब समझ आए?

मेघराज—गलियां तो सब देख लीं और शायद यह भी बतला सकूँगा कि कौन गली किधर गई है।

सरदार—शायद! तुमको पूरा भरोसा नहीं है। तुम अपने सामान के रखने के ही ठिए को भूल गए फिर गलियां और वे घर कैसे तुमको याद रहेंगे?

मेघराज—बात यह है सरदार कि मैं अपना खेल दिखलाता फिरता रहा। मेरे साथ इतनी भीड़ इकट्ठी हो हो जाती थी कि ध्यान बट बट जाता था। और यह डांग तो पेचों की पुड़िया है।

सरदार—बीच बीच में वहां की स्त्रियों को भी ताकते जाते थे (*हँसता है*)

मेघराज—झूठ नहीं बोलूँगा। उनका गहना और सौन्दर्य देख लेता था। देशदेशान्तर में घूमने और नए नए चेहरे देखने के लिए मैंने सपेरे का पेशा और यह आवारा जीवन अपनाया है।

सरदार—अब हमारा जीवन भी देखो। अच्छा लगे तो रम जाना। हमारे साथ इतने थोड़े आदमी देखकर चिन्ता मत करना। और बहुत से जो अटके खांगे सीटी बजाते ही आ कूदेंगे।

मेघराज—अब क्या करना है ?

सरदार—कल दोपहर के लगभग मैं सपेरे के वेश में बांसी चलूँगा। तुमको तालाब पर भीड़ में कजरियों के वक्त मिलूंगा। गांव को खुद देखूँ भालूँगा। सन्ध्या के पहले ही लौट आयंगे। फिर इन सब को एक बँधे हुऐ अड्डे से लेकर नौ दस बजे रात को धावा बोलेंगे।

मेघराज—ये सब लोग क्या आपके गांव के हैं ? कौन हैं ? इनके नाम क्या हैं ?

सरदार—यह सब अभी नहीं जान सकोगे। जब हम लोगों में हिल-मिल जाओगे तब जान लोगे। अभी तो उन लोगो के नाम सोम, मङ्गल, बुध इत्यादि अठवारे के दिनों में याद रक्खो।

(वे लोग मुस्कराकर सिर हिलाते हैं।)

मेघराज—*(ज़रा अचम्भे से)* सोम, मङ्गल, बुध ! शनिश्चर कौन है ?

सरदार—*(गंभीरता पूर्वक)* मैं स्वयं हूं। अब उस पहाड़ी की चोटी पर चलो। भोजन आराम सब वहां मिलेगा। वहीं कुछ और बातें भी करूँगा। तुम्हारा सामान कहां है ?

मेघराज—उठाए लाता हूँ। *(एक ओर प्रस्थान) दूसरी ओर से वे सब जाते हैं।*

चौथा दृश्य

[स्थान—बांसी गांव के बीच में निकली हुई चौड़ी सड़क। उसके दोनों ओर मकान। एक ही सतर मे बालराम और चाँदखां के मकान। बालाराम के मकान का दरवाज़ा खुला है, चाँदखां का बन्द है। सड़क पर से स्त्री पुरुष जल्दी जल्दी आते जाते हैं। सावनका दिन है इसलिए अपनी अपनी धुन में व्यस्त हैं। बालाराम

के मकान की ओर से सोमेश्वर का प्रवेश। समय लगभग ग्यारह बजे दिन।]

सोमेश्वर—चंदू, ओ चंदू। क्या कर रहे हो?

चाँदखाँ—खाना खा रहा हूँ। आया। ठहरना।

[बालाराम के दरवाज़े के किवाड़ कुछ बन्द होने को होते हैं; एक हाथ किवाड़ के पल्ले पर रक्खे हुए और दूसरे में राखियां लिए हुए चम्पा दिखाई पड़ती है।]

सोमेश्वर—*(इधर उधर देखकर, धीरे से)* नमस्ते।

चम्पा—*(ज़रा आंख चढ़ाकर परन्तु मुस्कराते हुए)* नमस्ते। बड़ा हल्ला कर रहे हो। क्या बात है?

सोमेश्वर—बिना चिल्लपुकार के तो देवता भी नहीं जागते। मैं इतना न चिल्लाता तो तुम दिखाई ही क्यों पड़ने लगी थीं?

चम्पा—अच्छा मैं यह चली भीतर। यहां मत टहलो। कोई क्या कहेगा?

सोमेश्वर—यही कि मै पागल हो गया हूं। मैं चला जाऊँ तो कजरियों में तालाब किनारे तो मिलोगी?

चम्पा—कदाचित् हां—कदाचित् न।

सोमेश्वर—तो मैं भी यहां टहलता रहूँगा—कदाचित् हां—कदाचित् न।

चम्पा—*(मुस्कराकर)* बड़े मुँहज़ोर हो।

सोमेश्वर—*(मुंह पर हाथ रखकर ज़ोर से)* चन्दू भैया हो, चन्दू भैया हो!

चम्पा—*(हँसकर)* मेरी तो नाक में दम करदी।

चाँदखाँ—(*भीतर से*) यार मेरे क्यों जान खाए जाता है ? आता हूँ भोजन समाप्त करके। ठहर भी जा ज़रा। यह शंख मत फूक।

सोमेश्वर—(*धीरे से*) एक की नाकों दम कर दिया ! दूसरे की जान खाए जा रहा हूँ। अब क्या करूँ ?

चम्पा—तुम यहां से नहीं हटते तो मैं जाती हूं। (*चम्पा किवाड़ों को ज़रा और बन्द करती है, परन्तु दोनों पल्लों के अन्तर से उसको देखती है।*)

सोमेश्वर—सवाल यह है—मैं एक ही ठौर पर अडिग खड़ा रहूं, या टहलता रहूँ ?

चम्पा—(*धीरे से*) बड़े हठी हो। सांझ को कजरियों में मत आना। (*धीरे से किवाड़ बन्द कर लेती है*)

(*चांदखाँ का प्रवेश*)

चाँदखाँ—तुमने तो चिल्ला चिल्लाकर आफ़त ही कर दी।

सोमेश्वर—नाक में दम ! जान खाली ! आफ़त करदी ! और कुछ ?

चाँदखाँ—(*हँसकर*) और यह सवाल क्या कर रहे थे ? अडिग खड़ा रहूँ या टहलता रहू ? मैंने तो ठहरने को कहा था—चाहे जैसे ठहरते।

(*मुस्कराहट को दबाए हुए राखी लिए चम्पा बाहर आती है। उसी समय करीमुन्निसा अपने घर से निकलती है।*)

करीमन—चम्पी, दो राखियां मुझको दो। कई तो लिए हो। दुनिया भर को बांधोगी क्या ? ब्राह्मण बनी जा रही हो।

चम्पा—जिसको राखी बांधूंगी, पैसे देगा। (*हँसकर करीमन को दो राखियाँ देती है*)

[*एक ओर से मेघराज का प्रवेश। वेशभूषा पहले दिन जैसी, परन्तु बेंगी, पेटी या बाजा नहीं लिए है। वह चम्पा की ओर देखता है। चम्पा दृष्टि हटा लेती है।*]

करीमन—आओ सोमू दादा तुमको राखी बांधूंगी।

सोमेश्वर—बांध दे बहिन, परन्तु मिठाई नारियल कुछ नहीं! कोरी राखी! भुखमरी कहीं की।

करीमन—हूँ, ऊँ! जैसा भाई तैसी बहिन।

(करीमन सोमेश्वर को राखी बाँधती है और फिर चाँदख़ाँ को भी। दोनों उसको हाथ जोड़ लेते हैं।)

सोमेश्वर—मांगे की राखी की दक्षिणा एक पैसा है, करीमन।

(करीमन और चाँदख़ाँ हँसते हैं)

करीमन—चम्पी, तुम क्यों खड़ी हो? ऐसे खड़े रहने का पैसा थोड़े ही मिलेगा।

[चम्पा चांदख़ाँ की ओर बढ़ती है। सोमेश्वर बग़लें झांक कर पीछे हटता है। चम्पा ज़रा घबराहट के साथ सोमेश्वर की ओर कनखियों देखती हुई चाँदख़ाँ को राखी बांधती है। सोमेश्वर की जगह कुतूहलवश मेघराज आ खड़ा होता है। सोमेश्वर और पीछे हट जाता है जहाँ मार्ग पर लोग आ जा रहे हैं। चाँदख़ाँ चम्पा के हाथ जोड़ लेता है। चम्पा परवश सी मेघराज की ओर आती हुई उसके हाथ की ओर राखी बढ़ाती है। मेघराज का चेहरा तुरन्त गंभीर हो जाता है; वह सकपका जाता है और अपना दायां हाथ आगे बढ़ा देता है। चम्पा नीचा सिर किए हुए उसको राखी बांध देती है। सोमेश्वर और पीछे हटता है। मेघराज मस्तक नवाकर उसके प्रति हाथ जोड़ता है। दोनों के माथों पर पसीने की बूंदें झल-झला आती हैं।]

मेघराज—आज से बेटी, तुम मेरी धर्म की बहिन हुई।

(चम्पा सिर उठाकर उसको ज़रा सा देखकर आंख नीची कर लेती है)

करीमन—सोमू दादा खिसक से क्या रहे हैं ! चम्पी, बांध दो उनको राखी।

(सोमेश्वर और पीछे हटता है)

चम्पा—अब मैं किसी को राखी नहीं बांधूँगी, खाना खाकर आती हूँ करीमन। सांझको कजरी में चलेंगे।

(चम्पा का आतुरता के साथ प्रस्थान)

चाँदखाँ—विचित्र लड़की है यह !

(सोमेश्वर लौट पड़ता है और चाँदखां के पास आ खड़ा होता है)

चाँदखाँ—सोमू, पैसे बचाने का अच्छा यत्न किया तुमने। पीछे दुबक गए !

(करीमन सोचने लगती है)

सोमेश्वर—नहीं तो, वहां एक बात करने लगा था। कहिए आज दिखलायंगे आप वह बन्दूकों वाला खेल ?

मेघराज—(*माथे का पसीना पोछकर मुस्कराते हुए*) आज तो बाजा ही साथ नहीं ले आया। जादू तो मेरा उसी के भीतर है।

चाँदखाँ—कमाओ खाओ, नाथ; परन्तु, कल शेखी ज़रूरत से कुछ अधिक हो गई थी।

मेघराज—वह हम लोगों की बोली है, बाबू। पर आज का दिन तो कमाने का नहीं है—देने का है। उस बहिन ने राखी बांधी पर मेरी गांठ में आज एक पैसा भी नहीं है।

चाँदखाँ—शाम को हमारे यहां की कजरी देखोगे ?

मेघराज—अवश्य।

सोमेश्वर—मेला भी है।

करीमन—मैं चम्पा के पास जाती हूँ।

सोमेश्वर—चलो हम लोग बस्ती में चलें।

(करीमन चम्पा के घर जाती है। वे सब दूसरी ओर चले जाते हैं)

पांचवां दृश्य

[स्थान—झांसी के तालाब का बँध। गांव एक ओर उंचाई पर है। दूसरी ओर दूर तक तालाब फैला हुआ है। तालाब की दूरवर्ती सीमाओं पर धान, ज्वार, मक्का इत्यादि के खेत और इधर उधर वृक्षों वाली टौरियां तथा ढालू मैदान भी है। ताल के बँध पर लड़कियां कजरियों को परिक्रमा दे देकर खोंटती है। जिन दोनों की कजरियां खुँट चुकी हैं उनको जल मे सिराती जाती हैं। छोटे छोटे लड़के बांसुरी बजाते हुए घूम रहे है। कुछ पुरुष भी घूम रहे हैं। देहात की स्त्रियां हिंडोलो मे झूल रही हैं। मेले में दूकानें लगी हुई हैं। पांच पुलिस वाले बन्दूकें लिए हुए इधर उधर दूकानों पर चीज़ें देख रहे हैं। भीड़ में एक ओर से सोमेश्वर, चांदखां का साथ साथ और पीछे पीछे, 'शनिश्चर सरदार' का प्रवेश। दूसरी ओर से भीड़ में मेघराज आता है। पीछे से कजरियों के दोने सिरपर रक्खे हुए कुछ स्त्रियां और लड़कियां आती हैं। इनमें चम्पा और करीमुन्निसा भी हैं। उन सबका गाते गाते प्रवेश।]

(गीत)

सावन महिना नियरे आए बेटा, बहिन तुम्हारी परदेस हो।
सबकी बहिनें खोटें कजरियाँ तुम्हरी बिसूरै परदेस हो।
सबकी बहिनें झूलें हिंडोला तुम्हरी बिसूरै परदेस हो।
कहै माता 'बहिनिया लिवा ल्याओ बेटा।' बहिन लिवावन जात हो।

(दोनों लड़कियाँ कजरियाँ खोंटती हैं। स्त्री पुरुष इधर उधर घूमते हैं)

करीमन—(*धीरे से*) चम्पी, तुमने सोमू दादा को राखी नहीं बांधी थी। क्या कारण था ?

चम्पा—(*सिर नीचा किए हुए*) कारण कुछ नहीं था। बाँधी ही नहीं।

करीमन—तो अब कजरी देना। दोगी न ? मैं दूँगी।

चम्पा—तुम देना। देखो करीमन वह नाथ आ गया। राखी बाँधने से भाई हो गया, (*हँसकर*) पर उसके पास दक्षिणा के लिए कुछ न था।

करीमन—सोमू दादा को कजरी देना, मैं सब वसूल करवा दूँगी।

चम्पा—मैं नहीं दूंगी, नहीं दूँगी। मैं तो अपने मन का करूँगी।

करीमन—सच सच बतलाओ क्या बात है ?

चम्पा—तुमको कजरी की कहानी मालूम है ?

करीमन—कैसी ! कौनसी ?

चम्पा—वह जो कजरी को घर से बाहर तालाब की ओर ले जाने के पहले घर घर में कही जाती है।

करीमन—क्या है—कहो ?

चम्पा—दो भाई थे। दोनों की स्त्रियों में कुछ अनबन रहती थी। छोटा भाई बखी-भौंरी के लिए बाहर निकल जाया करता था। उसकी पत्नी लौटने पर उससे कहा करती थी कि तुम्हारे बाहर चले जाने पर मैं निराहार रहा करती हूँ। उसके पति ने अपनी भावज से कहा। भावज अपनी देवरानी की निगरानी करने लगी। ठीक सावन के दिन, जब कजरियों की पूजा होती है, देवर बाहर जाने का बहाना करके कुठिया में बन्द हो गया। कजरी के पूजन के पहले स्त्रियों को दीवार पर कोई न कोई चित्र खींचना पड़ता है। देवरानी ने पूजा के लिए बहुत से बढ़िया पकवान बनाए, और जिठानी से पूछने गई कि दीवार पर कौनसा चित्र बनाऊँ। जिठानी ने फुसलाकर उत्तर दिया कि गायों की सार में नितम्बों के

बल बैठकर उन्हीं की छाप कुठिया पर लगा दो। देवरानी ने वैसा ही किया। फिर होम-धूप करके खाने पर चिपट गई। कहने लगी, नवमी को बोया और उसी दिन काटा खाया। कुठिया में से कोई बोला, दसवीं को क्या बोया और क्या काटा? खापीकर देवरानी ने जिठानी को बोलने वाली कुठिया का हाल सुनाया। वे दोनों कुठिया के पास आईं। जिठानी ने देवरानी से पूछा, 'देवरानी तुमने नवमी को क्या खाया?' देवरानी बोली, 'मैं तो उपासी हूँ, कुछ भी नहीं खाया।' जिठानी ने कुठिया से सवाल किया, 'बोलो कुठिया।' कुठिया ने उत्तर दिया, 'मैंने दसवीं को बोया और काटा खाया।' और, देवर कुठिया में से निकल पड़ा। देवरानी लज्जित हुई। उसके पति ने हँसकर कहा, 'आगे से उपवास न रक्खा करो और सच बोला करो।'

करीमन—(*हँसकर*) तुम उपवास रक्खा करो और सच न बोला करो। समझीं चम्पी ?

चम्पा—(*मुस्कराकर*) वाह ! कहानी का क्या यह अर्थ है ?

करीमन—तब चलो, कजरी बांटें। (*मुट्ठी तानकर*) फिर कभी देखूँगी। भीड़ में तुम्हारी किरकिरी क्यों करूँ।

(*दोनों उस स्थान पर पहुँचती हैं जहाँ आगे पीछे चाँदखाँ, मेघराज और सोमेश्वर खड़े हैं। चम्पा सोमेश्वर को संकेत करती है*)

सोमेश्वर—चन्दू मैं बन्दूकों का प्रबन्ध करलूँ और तालाब में चांदमारी करने के लिए मिट्टी के घड़े रखवा दूँ ?

(*जाने को उद्यत होता है*)

करीमन—ठहरो दादा, कजरी लेते जाओ।

सोमेश्वर—(*आगे बढ़कर*) लाओ बहिन।

[*करीमन उसको कजरी देती है। वह लेकर हाथ जोड़ता है और आंखों से लगा लेता है। मन्दगति से चम्पा पीछे हटती है।*

करीमन चाँदख़ां को कजरी देती है और चम्पा कतरा कर पहले मेघराज को फिर चाँदख़ां को देती है। सोमेश्वर तबतक वहां से चला जाता है।]

करीमन—सोमू दादा चले गए ! चम्पी तुमने उनको कजरी नहीं दी ?

चम्पा—वे तो चले ही गए।

करीमन—मैं ढूँढ़े लाती हूँ।

(चम्पा सहम सी जाती है)

चाँदख़ाँ—कहां भीड़ में जाती है ? दोनों अपने घर जाओ।

चम्पा—हम लोग चांदमारी का तमाशा देखना चाहती हैं।

चाँदख़ाँ—तब एक तरफ जाकर देखो। भीड़ में मत जाओ।

(चम्पा करीमन को एक ओर खींच ले जाती है)

चाँदख़ाँ—नाथ जी, निशाना लगाओगे ?

मेघराज—अवश्य ; और, मेरे ये साथी भी लगायेंगे यदि आपने अनुमति दी तो।

(सरदार आगे बढ़ता है)

चाँदख़ाँ—इनका नाम ?

मेघराज—इनका नाम सनीचरनाथ है।

चाँदख़ाँ—सनीचरनाथ ?

सरदार—(*आँख नचाकर*) मेरा काम देखिएगा—नाम से क्या ?

[बेड़नी नामक कुछ नर्तकियों का दादरा गाते और नाचते हुए प्रवेश]

[वे तीनों चाँदमारी के लिए चले जाते हैं और उनके साथ पुलिस के सिपाही भी। बेड़नियां गाती नाचती रहती हैं।]

[नेपथ्य में बन्दूकों की अवाज़]

एक कहता है--चांदमां का निशाना सिरे का रहा।

दूसरा कहता है—नाथ का निशाना भी बहुत बढ़िया रहा।

(*नर्तकियों का प्रस्थान। लड़कियां कजरी बांटती हुई घर जाती हैं*)

[*पुलिस के पांचों सिपाही मेघराज और सरदार के साथ आते हैं। सब अपने साफ़ों मे कजरियां खोंसे हैं।*]

सरदार—हम तो अब बूटी छानेंगे। आप लोगों को चले तो निकालूँ? बादामों वाली है।

सिपाहियों का जमादार--हां हां क्यों नहीं? ज्यादा देर हो गई है इसलिए थाने को लौटकर नहीं जायंगे। यहां स्कूल के अहाते में चैन से सोयंगे। परन्तु थोड़ी थोड़ी ही खायंगे, नाथ।

सरदार—हां थोड़ी सी ही लीजिए। हमको तो अभ्यास है; चाहे जितना बड़ा अंटा चढ़ा जायं।

(*सरदार भंग की एक बड़ी गोली मुहँ मे रख लेता है, और सिपाहियों को बाँटता है*)

एक सिपाही--अपने साथी को भी दो।

सरदार--यह अभी रंगरूट हैं।

सिपाही—तोभी थोड़ी सी।

मेघराज--मैं बिलकुल नहीं लेता।

[*वे सब झूम झूमकर कुछ अंटसंट और बेसुरे गाते हैं। सरदार अपने मुहँ का गोला दूसरो की आंख बचाकर उगल देता है और बेतरह झूमता है*]

सरदार--यहां अस्पताल भी तो है?

एक सिपाही--हाँ··· आँ ··जी···ई···है तो। फि · इ ··र क्या?

सरदार—ज्यादा च···ढ़े···तो···दवा न खा···लें···अस्प···ता···ल से।

जमादार—अरे···ए···न···नहीं। जा··आ कर··आ·आ···रा··म··से··ए···ले...ट···ते·हैं·'

(वे सब जाते हैं)

छठवां दृश्य

[स्थान—झाँसी बस्ती के बीच की चौड़ी सड़क। समय आधी रात के उपरान्त। बदली छाई है, परन्तु कभी कभी चन्द्रमा थोड़ी सी देर के लिए निकल आता है। जान पड़ता है थोड़ी देर में बादल और घिरेंगे। बस्ती में सन्नाटा छाया हुआ है। सड़क की रोशनी बुझी हुई है। एक ओर से उन्नीस हथियार बन्द डाकुओं का चुपचाप प्रवेश। वे दाढ़ियाँ चढ़ाए हुए हैं। मेघराज या उनमें से कोई सपेरों के कपड़े नहीं पहिने हैं। आगे सरदार और पीछे मेघराज हैं। उन दोनों के पीछे बाकी डाकू हैं। वे लोग बालाराम के मकान के सामने खड़े हो जाते हैं। और आपस में धीरे धीरे बातें करते हैं।]

मेघराज—सरदार, बालाराम लखपती का मकान यही है। मैंने सांप को इसी घर में से पकड़ा था। वे दोनों लड़कियां यहीं कहीं रहती हैं।

सरदार—भाड़ में जायें लड़कियां। मुझको बालाराम के मकान से मतलब है। अच्छा, अब मङ्गल, बुध और शुक्र नौ आदमी लेकर पिछ-वाड़े वाली गली से जाओ। मैंने तुमको स्थान पहिचनवा दिए हैं। आड़ ओट लेकर घेर कर खड़े हो जाओ। उन मकानों के बन्दूक वाले अपने मकानों में ही क़ैद रहें। जब यहां का काम खतम हो जावेगा हम लगातार तीन बन्दूक़ें दागेंगे। तुम लोग तुरन्त चतुराई के साथ नाले की ओर चल पड़ना। वहीं हम लोग मिल जायंगे। यदि उस मुहल्ले के लोग,

ख़ास तौर पर बन्दूक वाले लोग जाग पड़ें तो तुम लोग चाहें दाग़ना। उन लोगों को घर बाहर न निकलने देना। ख़बरदार !

[उनमें से बारह मनुष्य एक ओर चले जाते हैं। बालाराम के मकान के दरवाज़े पर चार आदमियों को छोड़कर सरदार मेघराज और एक साथी को लेकर नीम के पेड़ के सहारे बालाराम के मकान में उतर जाता है और भीतर पहुंच कर पौर का दरवाज़ा खोल देता है। दरवाज़ा खुलने पर एक ओर पलंग पर सोया हुआ बालाराम दिखलाई पड़ता है। वह अधेड़ अवस्था का दुबला पतला मनुष्य है। दूसरे पलंग पर चम्पा सोई हुई है। वह चादर से मुंह ढांपे है, केवल माथे का ऊपरी भाग और केश दिखलाई पड़ रहे हैं।]

सरदार—*(संकेत में मेघराज से धीरे से)* बालाराम ?

मेघराज—*(सिर हिलाकर)* हां।

सरदार—तुम इस स्त्री को देखे रहना, भागने न पावे, और न चिल्लाने पावे।

मेघराज—हूं।

[मेघराज चम्पा पर बन्दूक तान लेता है। सरदार बन्दूक के कुन्दे से बालाराम को जगाता है। वह हड़बड़ा कर उठ बैठता है। सरदार अपनी भौंहें संकुचित करके उसको चुप रहने का संकेत करता है। बालाराम चारों ओर देखता है।]

सरदार—तिजोड़ी की चाभियां लाओ जिसमें युगों से ग़रीबों को लूट लूटकर सोना चांदी जवाहिर इकट्ठा कर रक्खा है।

(बालाराम इधर उधर देखता है)

सरदार—अगर चिल्लाए तो गोली से अभी खोपड़ा चकनाचूर कर दूंगा।

बालाराम--(बालाराम कांपकर और घिग्घी बँधे हुए गले से) चाभियां, चाभियां मेरे पास नहीं हैं।

सरदार--(भयानक स्वर में) तब खोपड़ा जाता है, तैयार होजा।

(सरदार बन्दूक के घोड़े को खींचता है और बालाराम के सिर पर सुधियाता है)

बालाराम--(भयभीत, टूटे और बैठे स्वर में) चम्पी, बेटी चम्पी, चाभियां दे दे।

[चम्पा अचकचा कर चादर हटाती है और आंखें मलती हुई बिस्तर में बैठ जाती है। केवल सलूका पहिने है, ओढ़नी पीठ के नीचे है। अपने पिता की ओर देखती है और घबराई हुई दृष्टि से एक बार सरदार की आकृति को और फिर मेघराज को देखती है। मेघराज पर उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए ठहरती है। उसकी कलाई पर राखी बंधी हुई है। मेघराज ने चम्पा का नाम सुनते ही बन्दूक को उसकी सीध से हटाकर ऊपर की ओर कर लिया था। चम्पा के दृष्टिपात करते ही वह हिल जाता है और उसकी निगाह दायें हाथ पर बँधी हुई राखी पर जाती है जिसको दिनमें चम्पा ने बांधा था।]

मेघराज--(यकायक) ···ओफ़! बहि·····ओह!

सरदार--(कड़ककर) क्या?

मेघराज--(सिर नीचा करके) कुछ नहीं। चलिए यहां से। आप ग़लत घर में आए हैं। चलिए शीघ्र छोड़िए इस जगह को।

चम्पा--(केन्द्रित ध्यान से उसके कंठस्वर को पहिचान कर, हाथ जोड़ती हुई) भैया, भैया--राखी की लाज! अपनी बहिन को बचाओ! भैया तुम्हारे पांव पड़ती हूँ। (चम्पा उसकी ओर हाथ बढ़ाती है)

सरदार—(मेघराज से) तुम बाहर जाओ। (अपने साथी से) क्या देखते हो ? बाँधलो, पकड़ो इस बेईमान को।

[उसी समय पिछवाड़े की गली की दूसरी ओर से बन्दूकों के चलने की आवाज़ें आती हैं]

मेघराज—(*दृढ़ और ऊँचे स्वर में अपने साथियों को भयभीत करने के उद्देश्य से*) चलो, हटो यहां से। सरदार, तुम सब घेरे जारहे हो।

(सरदार का साथी भागता है, परन्तु सरदार खड़ा रहता है)

मेघराज—(*सरदार की छाती पर बन्दूक तानकर*) हटो, नहीं तो तुम्हारी छाती फूटती है।

सरदार—(*पीछे हटते हुए*) कपटी, अधर्मी। लड़की की आंख में डूबने वाला कायर।

[चाँदखाँ हल्ला सुनकर अपना दरवाज़ा खोलता है और लाठी लेकर घबराए हुए डाकुओं पर टूट पड़ता है। डाकू घबराहट में इधर उधर बन्दूकें दाग़ते हैं।]

चाँदखाँ—(*अपना घर खुला हुआ छोड़कर बालाराम के घर की ओर दौड़ता हुआ*) चम्पी बहिन ! दादा ! मैं आया। (*भीतर चला जाता है*)

[कुछ डाकू चांदखां के खुले मकान में क्षणिक छिपाव के लिए दौड़ पड़ते हैं; उसी समय लाठी लिए सोमेश्वर आता है]

सोमेश्वर—चन्दू, चन्दू।

(भीतर से करीमन चिल्लाती है—मुझको बचाना)

सोमेश्वर—अभी आया।

[वह लाठी घुमाता हुआ चाँदखाँ के मकान में घुस जाता है। डाकू अपनी बन्दूकें पहले ही चला चुके हैं। वे ख़ाली हैं। सोमेश्वर

उनपर वार पर वार करता है और दो डाकुओं को घायल कर देता है। वे दोनों कराहते और चिल्लाते हैं। मेघराज भी नीम के सहारे उतर कर कूद पड़ता है और भागता है। बालाराम के दरवाज़े से सरदार निकलकर भागता है। चंदू का एक लट उसकी पीठ पर पड़ता है परन्तु वह गिरता नहीं है और सड़क पर से नाले की ओर भागता है। कुछ डाकू लौट पड़ते हैं और सोमेश्वर द्वारा घायल किए हुए अपने दोनों साथियों को जल्दी से पीठपर रखकर पिटते पिटते भागते हैं। भागते हुए मेघराज की पिंडली पर सोमेश्वर की लाठी का छोर पड़ जाता है। वह भी नाले की ओर भागता है। बस्ती में बन्दूकें बराबर चलती हैं और बस्ती वाले इकट्ठे होकर मुहल्ले के उस भाग वाले डाकुओं का पीछा करते हैं। वे डाकू भी नाले की ओर भागते हैं, क्योंकि भाग निकलने का वहीं एक मार्ग है। नेपथ्य में कोलाहल होता है। डाकुओं के भाग जानेपर गाँव वाले बालाराम और चांदखां के मकानों के सामने जमा होते हैं। पीछे से लड़खड़ाते हुए पैरो पुलिस के वे पांचों सिपाही आते हैं। सोमेश्वर और चांदख़ाँ भीड़ के सामने आजाते हैं।]

सोमेश्वर—तुम लोग कहाँ थे? क्या सिपाहियों का यही कर्तव्य होता है?

चांदख़ाँ—कहां सो रहे थे तुम लोग?

जमादार—कहां गए हैं ऍं. वे लोग?

गाव वाले—नाले की ओर।

जमादार—हम देखते हैं।

(सिपाहियो का प्रस्थान)

चांदख़ाँ—चलो हम लोग भी पीछा करें।

सोमेश्वर—चलो।

(उसी समय गाँव के पाँचो बन्दूक़ वाले भी आजाते हैं)

वे पांचों—हम भी चलते हैं।

(*बालाराम बाहर आता है*)

चाँदखाँ—दादा कुशल है ?

बालाराम—(*घबराहट के साथ*) हा चन्दू भैया, बच गए।

सामेश्वर—सब कुशल से हैं ? कुछ माल तो नहीं ले जा पाए वे लोग ?

बालाराम—नहीं भैया। हम लोग सब बच गए।

(*सबका प्रस्थान*)

[*चांदनी कभी छिप जाती है, कभी उघर जाती है। एक दरवाज़े बाल बिखरे चम्पा का प्रवेश और दूसरे पर करीमन का।*]

करीमन—(*आतुरता के साथ*) बहिन चम्पी, कुशल है ?

चम्पा—(*कम्पित स्वर में*) हाँ बहिन। और तुम भी बच गईं न !

करीमन—हां। भीतर जाओ।

[*बालाराम भीतर जाता है। चाँदखाँ और बालाराम के किवाड़ बन्द हो जाते हैं।*]

सातवां दृश्य

[*स्थान—बांसी के बाहर नाले के पुल के पास पेड़ों की झुर-मुट। भागते हुए डाकुओं का प्रवेश। चार आदमी दो घायलों को थामे हुए हैं और चार आदमी मेघराज को पकड़े हुए हैं; वह घसीट घसीट कर लाया गया है इसलिए लोहूलुहान है। इन चार मे एक सरदार है। उनके कपड़े तितरबितर हे और वे घबराए हुए हैं। केवल सरदार निर्भय और दृढ़ जान पड़ता है। नेपथ्यमें बाँसी निवासियों की दौड़ धूप कोलाहल हो रहा है।*]

सरदार—झटपट ! झटपट ! इसी पेड़ से बांध दो। कसकर बाँध दो ! उसके बाद धड़ से सिर अलग करदो और चलो।

(मेघराज को वे लोग एक पेड़ से बांधते हैं)

मेघराज—मारदो, मारदो। जितनी खुशी मुझको मरने में हो रही है उतनी तुमको मेरे मारने में नहीं मिलेगी।

सरदार—बेईमान, उस लड़की के प्रेम ने तुझको भ्रष्ट किया और हम सबका सत्यानास।

मेघराज—खबरदार सनीचर जो इस प्रकार की बात बकी। मैं भले मां बाप का लड़का हूँ। मेरी मौज ने मुझको सपेरा और अवारा बनाया, परन्तु वह मौज बहिन को पहिचानने और बचाने से नहीं रोक सकी।

सरदार—बहिन ! वह छोकरी तेरी बहिन ?

मेघराज—हां, राखी की दी हुई बहिन।

सरदार—मूर्ख ! गधा !

एक डाकू—सरदार ज़रा सी चिलम पीलें ? बड़ी देर से नहीं पी है। इधर हम लोगों ने चिलम का सर्राटा खीचा, उधर इसकी गर्दन पर तलवार खिची और उसकी गर्दन को नाले में फेककर हम लोग जंगल में चल दिए।

सरदार—जल्दी करो। इसके केशों को डाल से मज़बूती के साथ बाँध देना जिसमें गर्दन हिलाने न पावे।

[कुछ लोग मेघराज को उसी तरह जकड़कर बाँध देते हैं। तबतक चकमक से आग तैयार कर वे सब तम्बाकू पीते हैं। आग की लौ को बाँसी निवासी देख लेते हैं और बन्दूकें चलाते हुए वे लोग नाले की ओर चिल्लाते हुए दौड़ते है। डाकुओ के पास से गोलियां सनसनाती हुई निकल जाती है। वे लोग मेघराज को नहीं

मार पाते और उसको पेड़ से जकड़ा हुआ छोड़कर भाग जाते हैं। दूसरी ओर से गाँव वालों और सिपाहियों का प्रवेश। अब सिपाहियों का नशा उतर गया है। मेघराज कराहता है।]

सोमेश्वर—(*कराह सुनकर*) यह क्या है? देखो, देखो! अहा, एक को तो पकड़ा!

(*बन्दूकें ताने हुए लोग मेघराज को घेर लेते हैं*)

चाँदखाँ—अरे यह तो बेतरह बांधा गया है! हमारे गांव का तो नहीं है कोई यह!

[मेघराज और अधिक कराहता है। गाँव वाले उसके बन्धन खोलते हैं। वह गिर पड़ता है। एक गाँव वाला दियासलाई जलाकर उसकी आकृति को देखता है।]

गांव वाला—यह हमारे गांव का नहीं है शायद कोई बटोही है।

सोमेश्वर और चाँदखां—(*दियासलाई जलाकर और पास से देखकर*) अरे यह तो नाथ है—वह सपेरा! क्या डाकुओं की आवड़ में पड़ गया?

मेघराज—(*क्षीण स्वर में*) वे मुझको मार डालना चाहते थे। आप लोग आ पहुंचे, इसलिए बच गया।

सोमेश्वर—चन्दू इसको गांव में ले चलना है। इसको ऐसा कसकर बाँधा गया है कि जगह जगह से रक्त निकल रहा है!

पुलिस का जमादार—डाकुओं का पीछा करना चाहिए। अभी वे दूर नहीं गए होंगे।

चाँदखाँ—आप लोग जाइए। हम तो व्यर्थ समझते हैं। गांव को लौटेंगे।

जमादार—हम पांच आदमी इतने बड़े गिरोह का पीछा नहीं कर सकते। हम भी गांव चलेंगे।

चाँदखाँ—चलो, हम लोगों को नाथ की चिन्ता अधिक है। (*मेघराज से*) गांव तक पैदल चल सकोगे ?

(*मेघराज चलने के लिए खड़ा होता है, परन्तु लड़खड़ाकर गिर पड़ता है*)

आठवां दृश्य

[*स्थान—बाँसी बस्ती के बीच की सड़क। बालाराम के मकान के सामने बस्ती वाले मेघराज को लेकर आते है।*]

सामेश्वर—यहीं ठहरा दो। देखें यहां सब कुशल है। आतुरता में हम लोगों ने उस समय पूरा हाल नहीं पूछ पाया और डाकुओं के पीछे दौड़े गए।

चाँदखाँ—यदि डाकुओं ने आगी न जलाई होती तो यह विचारा नाथ निस्सन्देह मारा जाता। इसको वे बांध तो चुके ही थे। नाथ, पानी पियोगे ? तुम्हारा नाम क्या है भाई ?

मेघराज—(*क्षीण स्वर में*) पानी पिऊंगा। नाम मेरा मेघराज है।

[*चम्पा और करीमन अपने अपने दरवाज़ों पर आ जाती हैं और बालाराम आगे*]

चम्पा—मैं पानी लाती हूँ।

(*चम्पा पानी लेकर आती है*)

सोमेश्वर—सब कुशल है ? सब बच गए न ?

बालाराम—हां भैया।

सोमेश्वर—मेघराज को पौर में चारपाई पर लिटा दिया जाय—तब तक मैं अस्पताल से डाक्टर और दवा को लाता हूँ। अस्पताल में सेवा सुश्रूषा का प्रबन्ध नहीं है। इसलिए यहीं लिटा देना ठीक होगा न ?

चांदख़ाँ—ठीक है। दादा ठीक है न ?

चम्पा—यहीं लिटा दीजिए, यहीं।

बालाराम—ठीक है, ठीक है। यहीं लिटा दो।

(सोमेश्वर का प्रस्थान)

[मेघराज को पौर में चारपाई और साफ सुथरे बिस्तरों में लिटा दिया जाता है। चम्पा उसको पानी पिलाती है। पौर में लालटेन का प्रकाश हो रहा है। चम्पा उस प्रकाश मे मेघराज को अच्छी तरह पहिचान लेती है। मेघराज कुछ कहना चाहता है; परन्तु चम्पा एक सूक्ष्म संकेत द्वारा उसको चुप पड़े रहने के लिए समझा देती है। वह प्रसन्न है और उत्तेजित है। कुछ गाँव वाले पौर में हैं, बाक़ी अनेक बाहर सड़क पर।]

बालाराम—उन डाकुओं में एक भला मानस भी था। उसी की कृपा से बचे। कोई भी हानि नहीं हो पाई।

चम्पा—(*ज़रा तीखे स्वर में*) दादा, कृपा तो चन्दू दादा की और इन सब बस्ती वालों की है जो ठीक समय पर आ गए। कोई भी डाकू भला क्यों बचाता ?

बालाराम—(*मेघराज को निकट से देखकर*) ऐं चम्पी ··

चम्पा—इन सब जनों को पान तमाखू पानी दीजिए। नौकर त्योहार के कारण अपने अपने घर चले गए हैं। मैं बाहर नहीं निकल सकूँगी। आप इन सब का आदर करिए। जाइए।

बालाराम—(*दबे हुए आश्चर्य के साथ*) इस बिचारे को कहां से पकड़ा ? इसके तो चोटें हैं ! कहां लगी ?

चाँदख़ाँ—दादा यह मेघराज सपेरा—नाथ है। कहीं डाकुओं की आवड़ में पड़ गया। वे शायद इसको नाले के पेड़ों में बांध कर गांव में डाका डालने आए थे। जब हम लोग पछियाते पछियाते नाले पर पहुचे,

डाकू तो भाग गए, पर हम लोग नाथ को छुड़ा लाए। आज चम्पी ने इसको राखी बांधी थी।

बालाराम—नाथ! सपेरा! चम्पी ने राखी बांधी थी! डाकू भाई! नहीं वह सब कुछ और था।

चांदखां—आप अब भी घबराए हुए हैं! अब यहां डाकू वाकू कुछ नहीं।

बालाराम—(*माथे का पसीना पोछकर*) मैं पान तमाखू का प्रबंध करता हूं।

(*बालाराम भीतर जाता है*)

(*पौर मे आए हुए गाँव वाले और चाँदख़ाँ बाहर सड़क पर आ जाते हैं*)

करीमन—(*अपने दरवाज़े पर से*) जब चन्दू दादा चम्पी के घर में डाकुओं पर पिल पड़े, तब कुछ डाकू हमारे घर में आ घुसे थे, पर सोमू दादा ने ऐसी लाठी भांजी कि दो को चित्त कर दिया और बाक़ी को भगा दिया।

चांदखां—(*बस्ती वालों से*) असल में हम लोगों में नियम, तरतीब कुछ नहीं है। हड़बड़ाहट में इधर उधर फैल फुट्ट दौड़ धूप करते फिरे। अगर सङ्गठन होता तो क़ायदे से काम करते और डाकू निकल कर न भाग पाते। मेरी लाठी ने एक डाकू की पीठ उधेड़ पाई और शायद दूसरे के पैर में लाठी का छोर भिड़ पाया। सोमेश्वर ने लाठी से दो की रीढ़ या टांग तोड़ी, परन्तु और अधिक कुछ न हो पाया।

(*मेघराज कराहता है*)

चम्पा—(*धीरे से*) भैया, सावधान। कोई बात मुँह से ऐसी न निकले जिससे पहिचान लिए जाओ। मेरे मुँह से कभी कुछ न निकलेगा, और दादा को मैं अकेले में सब समझा दूँगा।

[सोमेश्वर डाक्टर को लेकर आता है। डाक्टर मेघराज की मरहमपट्टी करके चला जता है। उस बीच में बालाराम उपस्थित जनों को पान तमाखू; पानी इत्यादि देता है।]

मेघराज—मैं कब तक चंगा हो जाऊँगा?

चम्पा—शीघ्र।

(उसी स्थान पर करीमन आ जाती है)

करीमन—क्या तुमको डाकुओं ने सन्ध्या से ही पकड़ लिया था? क्यों पकड़ लिया था उन लोगों ने?

मेघराज—बतलाऊंगा कभी। अभी तो थकावट मालूम होती है।

चम्पा—करीमन, इनको शांत पड़ा रहने दो।

मेघराज—मैं तुम दोनों बहिनों का अहसान मानता हूं।

करीमन—अब सो जाओ।

मेघराज—अभी नींद नहीं आ रही है। सोचता हूं आगे क्या करूँगा।

(सोमेश्वर निकट आ जाता है और चम्पा को ज़रा गहरी दृष्टि से देखकर मेघराज को देखने लगता है)

सामेश्वर—आगे क्या करोगे, इसको अभी मत सोचो। बिलकुल स्वस्थ होने पर सोचना।

मेघराज—*(उत्तेजित होकर)* मैं छुटपन में ही आवारा हो गया। सांप, बन्दर, कीड़े मकोड़े न जानें क्या क्या जंजाल अपने जीवन के अङ्ग बनाए। पैसे वाले और भले मां बाप को छोड़कर देशाटन के लिए सपेरा बनकर निकल पड़ा। अब न सपेरा रहूँगा और न घर लौट कर जाऊंगा। यदि आपके गांवमें मज़दूरी मिल गई तो यहीं पेट भरूँगा।

(उसके आंसू आ जाते हैं)

चम्पा—यह घर अपना ही समझना, भैया।

मेघराज—(*ज़रा सिर उठा कर*) यह बहिन का घर है। मुफ्त का कैसे ग्रहण करूँगा ? अभी तो, बहिन, राखी की दक्षिणा का ही ऋण मेरे सिर पर है।

चम्पा—मिल तो...(*यकायक चुप हो जाती है*)...मिल जायगी।

(*बालाराम मेघराज की चारपाई के पास आता है*)

बालाराम—डाकू भाग कर कहां गये होंगे ?

चम्पा—(*रूखे स्वर में*) इनको क्या मालूम ? आप भी खूब हैं दादा।

सड़क से एक ग्रामीण—ये डाकू घुसे कहां होकर थे ?

बालाराम—क्या मालूम, हम लोग तो दिन भर के थके मांदे होने के कारण सो रहे थे। जब जागे, उन लोगों को बन्दूक लिए छाती पर चढ़ा पाया।

सड़क पर से दूसरा—घर में नौकर नहीं था ?

बालाराम—त्योहार के कारण घर चले गए थे।

चम्पा—अब आप लोग सब सो जावें।

बालाराम—हां ठीक है सवेरे बात करेंगे।

सड़कपर से कुछ लोग—अच्छा हम जाते हैं दादा, परन्तु सावधान रहेंगे; क्योंकि, अभी काफ़ी रात है।

बालाराम—बड़ी कृपा की आप लोगों ने। बहुत बहुत धन्यवाद। अब सोइए, कोई चिन्ता की बात नहीं।

चाँदखां—चलो करीमन, हम लोग भी सोवें। जायं न चम्पी हम लोग ?

चम्पा—जाओ दादा। अब कोई भय नहीं है।

सोमेश्वर—मैं बना रहूं ? सब लोग सो जाना, मैं जागता रहूँगा। मेघराज की देख भाल भी करता रहूँगा।

मेघराज—नहीं, आप कष्ट न करें। मैं बहुत चैन में हूं। नरक से स्वर्ग में आया हूं।

चम्पा—(*बालाराम से*) दादा, किसी की भी तो आवश्यकता नहीं अब।

बालाराम—हां भैया सोमू जाओ तुम भी।

[*एक आकुल दृष्टि से चम्पा को देखकर सोमेश्वर जाता है। करीमन, चांदखाँ और अन्य वाँमी निवासी तथा सिपाही भी जाते हैं।*]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—बांसी । सड़क पर बालाराम का घर । पौर के पास वाले एक कमरे में मेघराज पड़ा है । वह अच्छा हो रहा है, परन्तु बिलकुल स्वस्थ नहीं हुआ है । दरवाज़ा खुला हुआ है । बालाराम भीतर से पौर में आता है । समय दोपहर के पहले ।]

बालाराम—चम्पी, ओ चम्पी ।

(नेपथ्य से)—आई ।

(चम्पा पौर में आती है)

चम्पा—क्या है, दादा ?

बालाराम—(एक ओर ले जाकर) चम्पी, पुलिस का थानेदार आया है । वह छानबीन कर रहा है । मुझसे भी पूछता था । मैंने कहा, 'उनमें से एक डाकू दयावान था । उसने बचाया । उसकी शकल मेघराज से मिलती जुलती थी ।'

चम्पा—मेघराज से ! आपने यह क्या कह दिया !

बालाराम—इसको अस्पताल में भेज देना चाहिए । वहां शीघ्र अच्छा हो जायगा ।

चम्पा—नहीं दादा, वह मेरा भाई है। अस्पताल में उसकी सुश्रूषा नहीं हो सकेगी। आप चिन्ता न करें, मुझको उसकी सेवा बोझ नहीं जान पड़ती।

बालाराम—परन्तु उसका यहां रखना बिलकुल ठीक नहीं।

चम्पा—आपने थानेदार से क्या कहा था?

बालाराम—और कुछ नहीं कहा। तुम मुझको ठीक ठीक बतलाओ। तुमने यह सब क्या कहा था—भैया! राखी की लाज! अपनी बहिन को बचाओ!

चम्पा—मैंने तो कुछ नहीं कहा था। मैं बहुत डरी हुई थी।

बालाराम—मैं भी बहुत भयभीत था, परन्तु वे शब्द मुझको याद हैं। मुझसे मत छिपाओ। ठीक ठीक बतलाओ। डाकुओं से अपने को बचाने वाला यही था न? तुमने दिन में इसको राखी बांधी थी?

चम्पा—न, बिलकुल ग़लत। कल राखी का दिन था। उसी की दुहाई देकर उसको भैया कहा होगा और बहिन बनकर उससे रक्षा की भीख मांगी होगी।

बालाराम—(*कुछ सोचकर*) तो शायद मैं ही भूलता होऊँ।

(*थानेदार का एक सिपाही के साथ प्रवेश। थानेदार एक तस्मों से पिस्तौल लटकाए है*)

बालाराम—नमस्ते, आइए।

थानेदार—नमस्ते। मैं उस बीमार से कुछ बात करना चाहता हूं।

चम्पा—(*ज़रा ऊँचे स्वर में*) वह अभी इतना अस्वस्थ है कि न बात ठीक समझ सकता है और न उत्तर ठीक दे सकता है।

थानेदार—(*बालाराम से*) इसी लड़की पर डाकू ने बन्दूक तानी थी?

बालाराम—जी हाँ।

थानेदार—बेटी, जिस डाकू ने डाका नहीं पड़ने दिया उससे तुमने क्या कहा था ?

चम्पा—ठीक ठीक स्मरण नहीं।

थानेदार—तो भी जितनी सुध हो उतना ही बतलाओ।

चम्पा—मैं बहुत घबरा गई थी। मैंने हाथ जोड़कर कहा था कि मैं तुम्हारी धर्म की बहिन हूँ, रक्षा करो—और कुछ याद नहीं आता।

थानेदार—तुमने सावन के दिन इस बीमार को राखी बांधी थी ?

चम्पा—अवश्य।

थानेदार—और इसको कजरियां दी थीं ?

चम्पा—(*कण्ठ को नियंत्रित करके दृढ़ता के साथ*) जी हां।

थानेदार—क्यों ? इसको भाई क्यों बनाया था ?

चम्पा—क्योंकि इसने एक दिन पहले जादू के खेल दिखलाए थे। मुझको अच्छा लगा; मैंने इसको अपना भाई बना लिया।

थानेदार—और रात को डाकुओं के साथ यही 'भाई' आया, और तुमको पहिचान कर फिर इसने डाका नहीं पड़ने दिया। और इसीलिए इसको डाकुओं ने, बाद को, पकड़कर मार डालना चाहा ? यही है न ?

चम्पा—(*सँभलकर*) मुझको क्या मालूम ? परन्तु, मैं निश्चय के साथ कह सकती हूँ कि उस रात डाकुओं में यह न था।

थानेदार—बालाराम जी, आप कहते हैं कि इस बीमार की सूरत से उस बचाने वाले डाकू की सूरत मिलती जुलती है ?

बालाराम—बेटी चम्पी, डरो मत।

चम्पा—आप भले ही डरें, दादा, मैं क्यों डरने लगी ?

थानेदार—तो बतलाओ सच सच।

चम्पा—सब सच ही सच है। डाकू चेहरे पर टाटियाँ चढ़ाए थे। सूरत शकल उनकी कैसे पहिचानी जा सकती थी? दादा बहुत डरे हुए थे। मैं भी भयभीत थी। इनको शकल का स्मरण रह कैसे सकता है?

बालाराम—लड़की का कहना ही ठीक होगा।

थानेदार—आपने तो कुछ और कहा था। खैर, मैंने सुना है उस दिन सिपाहियों ने भङ्ग पी थी या उनको पिलाई गई थी?

चम्पा—(*जल्दी से*) जब वे लोग बस्ती वालों के साथ रक्षा के लिए और डाकुओं को पहिचानने के लिए हमारे घर पर आए तब तो नशे में नहीं जान पड़ते थे।

थानेदार—बस्ती वाले तो कहते हैं कि वे भङ्ग पिए हुए से थे।

बालाराम—आपने सिपाहियों से नहीं पूछा? वे क्या कहते हैं?

थानेदार—देखा जायगा। पहले एक बात साफ़ कर लेना चाहता हूं। मैंने सुना है कि यह बीमार, चाहे डाकुओं में रहा हो या न रहा हो, उस दिन एक सपेरे के साथ देखा गया था। उस सपेरे ने सिपाहियों को भङ्ग पिलाई थी। मैं इस बीमार को देखना चाहता हूं।

चम्पा—देख लीजिए। वह अच्छी तरह बात ही नहीं कर सकता।

[मेघराज इस संकेत को सुन लेता है; थानेदार भीतर जाता है और बड़ी खिड़की खोलता है। चारपाई पर पड़ा हुआ मेघराज उसको दिखलाई पड़ता है। उस पर पट्टियां अब भी चढ़ी हुई हैं।]

थानेदार—डाक्टर साहब कहते थे कि तुम बोलचाल करने योग्य हो मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। जवाब दो।

मेघराज—(*बने हुए क्षीण और घुटे हुए स्वर में*) हूं···ऊँ···· मैं···एँ···एँ···

थानेदार—कल शाम को कजरियों के मेले के समय तुम्हारे साथ कोई एक सपेरा और था?

मेघराज—(*वैसे ही स्वर में*) हों····ओं····पा · नी · पा···नी।

चम्पा—ठहरो, मैं देती हूँ। (*चम्पा उसको पानी पिलाती है*)

थानेदार—शायद यह मनुष्य उन लोगों में न रहा हो, परन्तु इसकी गवाही काम की होगी। दो एक दिन में जवाब देने योग्य हो जायगा।

बालाराम—डाकुओं का कुछ पता लगा थानेदार साहब?

थानेदार—पता कैसे लगे? आप लोग सच सच बतलावें, ठिकाने की बातें करें तो कुछ सूत हाथ पड़े; परन्तु आपका कुछ गया नहीं, इसलिए आपकी लड़की और आप साफ साफ नहीं बतलाते। आप भी तो कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ। मैं दो एक दिन में उन सिपाहियों को लेकर फिर आऊंगा। इस समय वे लोग एक काम से बाहर गए हैं। आपकी गांव-पञ्चायत को हिदायत किए जाता हूं कि इस बीमार पर नज़र रक्खे।

(*पिछवाड़े से रोने का शब्द आता है*)

थानेदार—(*उपेक्षा से*) यह क्या है?

बालाराम—(*सहानुभूति के साथ*) गांव में कल से हैजे की शिकायत है। एक बुढ़िया बीमार हो गई थी। जान पड़ता है कि मर गई।

थानेदार—हैज़ा! गांव पञ्चायत ने कोई प्रबन्ध नहीं किया?

बालाराम—शुरू ही तो हुआ है।

चम्पा—कई मनुष्य कल रात से यकायक बीमार पड़ गए हैं।

थानेदार— डाक्टर साहब क्या कर रहे हैं?

बालाराम—मालूम नहीं साहब।

थानेदार—अच्छा मैं फिर आऊंगा।

(*सिपाही के साथ थानेदार का प्रस्थान। चम्पा अपना दरवाज़ा और खिड़की बन्द कर लेती है*)

दूसरा दृश्य

[स्थान—वही । समय दो दिन उपरान्त एक पहर दिन चढ़े । सड़क पर एक ओर से सोमेश्वर चाँदखाँ तथा कुछ और युवक बाल्टियाँ लिए हुए आते है । डाक्टर साथ मे है ।]

चांदखाँ—बाक़ी कुओं में जल्दी लाल दवा डालो और मुहरियों में धुनिया चूर्ण ।

सोमेश्वर—बस्ती के कुएँ तो सब निबटा लिए । केवल खेती किसानी वाले रह गए हैं ।

डाक्टर—उनमें भी जल्दी से दवा डालिए ।

सोमेश्वर—आप तब तक लोगों को सुइयां लगाइए ।

डाक्टर—अस्पताल में सीरम ही नहीं है, सुइयां काहेकी लगाउंगा ? एक आदमी ललितपूर दौड़ाया था । वह कहता आया है कि उस ओर हैजे ने यकायक इतना प्रकोप किया है कि दवा समाप्त हो गई । सरकार को तार दिया है ।

चाँदखाँ—बड़ी मुश्किल हुई । ऐसे अस्पताल को क्या शहद लगाएँ जिसमें दवायें तक नहीं ? अफ़सोस डाक्टर साहब !

डाक्टर—मुझको आप से भी ज्यादा अफ़सोस है, पर करूँ क्या ?

चाँदखां—आपने पहले से क्यों नहीं काफ़ी सीरम रक्खा ?

डाक्टर—मुझको क्या सपना होता था कि यहां हैज़ा फूट पड़ेगा ?

(एक बस्ती वाले का हांफते हुए प्रवेश)

बस्ती वाला—डाक्टर साहब, डाक्टर साहब, चलिए मेरा लड़का हैजे में ग्रस्त हो गया है ।

(उसी समय एक दूसरा हाँफ़ता हुआ आता है)

दूसरा—और मेरी लड़की को हो गया है।

(तुरन्त एक तीसरा उसी प्रकार आता है)

तीसरा—मेरी स्त्री मर रही है। चलिए।

(नेपथ्य में घबराहट का शब्द होता है)

डाक्टर—*(चिड़चिड़ाकर)* मैं फटकर क्या दस हो जाऊं ? चलो, प्रत्येक मरीज़ को अलग अलग ही देख सकूंगा: एक साथ तो देख नहीं सकता।

चाँदखां—खिलाने पिलाने की दवा तो है आपके अस्पताल में ?

डाक्टर—है तो, परन्तु सारी बस्ती के लिए थोड़े ही है। दूसरे, हर मरीज़ के पास बार बार दवा देने तो मैं जा नहीं सकता।

घबराए हुए आगन्तुक—*(एक साथ)* चलिए डाक्टर साहब; चलिए, देर हो रही है।

चाँदखाँ—*(शान्त होकर)* आप चलिए। हम लोग मरीजों के पास बारी बारी से सेवा के लिए रहेंगे। आपको भटकना नहीं पड़ेगा।

(डाक्टर का उन आगन्तुकों के साथ प्रस्थान)

सोमेश्वर—डाक्टरों में क्या कुछ मानवीयता न होनी चाहिए ?

चाँदखाँ—देखा जायगा सोमू। हम अपनी गांव पञ्चायत द्वारा और कोई अच्छा डाक्टर बुलवायेंगे और अपने यहां के इस निकम्मे अस्पताल को अधिक विस्तृत और उपयोगी बनायंगे। चलो, उन कुओं में जल्दी से दवा डालें जिसमें बीमारी आगे फैलने न पावे। उसके बाद बीमारों की देखभाल करें। *(साथी युवकों से)* तुम, लोग-सब, काम करने के लिए तैयार हो ?

सब एक साथ—तैयार हैं-तैयार हैं।

सोमेश्वर—(*ज़रा मध्यम स्वर में*) इस काम को निबटा कर चलते हैं। सब लोग काम बाँट लेंगे। (*पेट के एक भाग को पकड़ता है*)

[*अन्य युवकों के पीछे पीछे चाँदखाँ और सोमेश्वर चलते हैं*]

सोमेश्वर—(*चांदखाँ से धीरे से*) चन्दू, तुम्हारे पास कुछ दवा है। जी भी मतलासा रहा है। (*मुस्कराकर*) मै डरता नहीं हूँ।

चाँदखाँ—(*सोमेश्वर को कन्धे से चिपटा कर*) अरे सोमू, मैं तुझे क्या जानता नहीं? डरतो तुझसे कोसों दूर भागता है पट्ठे। दर्द वर्द अभी ठीक हुआ जाता है।

[*चाँदखाँ उसको दवा देता है। वह खालेता है। वे दोनों अन्य-युवकों के पीछे पीछे चले जाते हैं।*]

तीसरा दृश्य

[*स्थान—वही। समय उसी दिन दोपहर के लगभग। चम्पा दरवाज़ा खोलकर बाहर आती है*]

चम्पा—करीमन, ओ करीमन क्या कर रही हो?

(करीमन—*भीतर से*—आई)

(*करीमन अपना दरवाज़ा खोलकर आती है*)

करीमन—कहां के लिए निकल पड़ीं चम्पी! बस्ती के भीतर मत जाओ भाई बीमारी ज़ोर पकड़ती चली जा रही है।

चम्पा—मैं तो कहीं भी नहीं जा रही हूँ। नीम पर झूला न डाल लें? झूलें और गाएँ—मन बहलेगा।

करीमन—कुछ बातें करें। आओ पेड़ के नीचे।

चम्पा—अच्छी बात है। (*दोनो मकान के निकटवर्ती पेड़ के नीचे खड़ी हो जाती हैं*)

करीमन—सच सच बतलाना। सावन के दिन से ही एक बात मेरे मन में खटक रही है।

चम्पा—सच कहती हूँ करीमन, यह बिचारा मेघराज डाकुओं में न था। दादा को व्यर्थ का भ्रम हो गया है और उन्होंने नाहक़ भ्रम की बात थानेदार को बतलाई। उसके भी मन में व्यर्थ सन्देह हो गया है।

करीमन—उँह, मैं यह बात नहीं पूछ रही हूँ।

चम्पा—(*सरलता के साथ*) और कौनसी बात है करीमन?

करीमन—मेरी सौगन्ध खाओ कि ठीक ठीक बतलाऊँगी।

चम्पा—तुम्हारी सौगन्ध तो न खाऊँगी। अपनी खाती हूं। पूछो।

(*चम्पा सांस साधकर सन्देह की दृष्टि से करीमन को देखती है*)

करीमन—अच्छा, कोई सौगन्ध मत खाओ। तुमने सावन के दिन सोमू दादा को राखी क्यों नहीं बांधी? कजरियां भी क्यों नहीं दीं?

चम्पा—(*झेंप को मुस्कराहट में बदलकर*) मेघराज को देखकर ऐसा लगा कि इसे भाई बनालूँ; फिर और किसी का ध्यान ही नहीं रहा। चन्दू दादा को मैंने राखी बांधी थी। कजरियां भी दी थीं।

करीमन—तब सोमू दादा के साथ वही बर्ताव क्यों नहीं किया? मैंने उस दिन कुछ पूछा तो तुमने टालटूल दिया था। अच्छा, तुम सोमू दादा को कनखियों क्यों चितै रही थीं। मैं सब ताड़ रही थी।

चम्पा—बड़ी जासूस हो न?

करीमन—बतलाओ; मन की कोई विशेष गांठ बँध गई है क्या?

चम्पा—तुम्हारा सिर। (*हँसती है*)

करीमन—(*गम्भीर होकर*) असम्भव के पीछे मत दौड़ो चम्पी। दादा जी नहीं मानेंगे। सोमू दादा का घर तुम्हारे मुकाबिले में दरिद्र है। अभी सँभल जाने का समय है।

चम्पा—(*बनावटी रोष के साथ*) कैसी हो तुम करीमन ! दरिद्र लोगों के क्या ब्याह नहीं होते ? और मुझको किसी से प्रयोजन भी क्या है ? करीमन, चन्दू दादा इत्यादि इस बीमारी में जनसेवा का कितना बड़ा काम कर रहे हैं ! हम लोग भी कुछ करें। स्त्रियां शीघ्र बीमार होती हैं और मरती हैं, क्योंकि वे देर तक बीमारी छिपाए रहती हैं। इस काम में हम लोगों के पड़ने से और लड़कियां भी आगे आयँगी और हम लोग अनेक स्त्रियों और बालकों के प्राण बचा सकेंगी।

करीमन—मुझको भी यह काम अच्छा लगेगा। पर वह मेघराज भाई क्या भीतर अकेला पड़ा रहेगा ?

चम्पा—(*धीरे से*) वह तो लगभग अच्छा है, परन्तु मैं उसको ...लिस वालों के सामने इस समय नहीं करना चाहती। वे उसको ... हैरान करेंगे।

करीमन—हां, ठीक है। परन्तु सन्देह बस्ती में लगभग सबको है कि डाकुओं से त्राण देने वाला डाकू यही है।

(*चाँदख़ाँ का दौड़ते हुए प्रवेश*)

चाँदख़ाँ—करीमन, करीमन, जल्दी से प्याज़ बांट कर रंग निचोड़ और उसमें थोड़ीसी हींग घोलकर कांच की प्याली में दे।

करीमन—अभी देती हूँ। क्या है दादा ?

चाँदख़ाँ—हैज़ा इकदम प्रचण्डता के साथ फैल रहा है। अस्पताल ...ं दवा नहीं है। सोमू को हैज़ा हो गया है। बीमारों की सेवा करते करते ...ह स्वयं ग्रस्त हो गया है। जल्दी कर।

चम्पा—एँ ! (*वह अचेत सी होकर पेड़ से टिक जाती है और ...सका रंग फक हो जाता है*)

करीमन—एँ ! सोमू दादा को हैज़ा ! अभी दवा तैयार कर के ...ती हूँ। (*भीतर जाती है*)

चाँदखाँ—चम्पी, तुझको क्या हो गया बहिन ? बीमारी की खबर सुनकर घबरा गई क्या ? अरी, लोग बीमार पड़ते जाते हैं तो अच्छे भी होते जा रहे हैं। डरमत। डरने से ही तो यह बीमारी पैदा होती है।

चम्पा—(*गला स्वच्छ करके अपने को संभालती हुई*) नहीं दादा, इधर उधर के बुरे समाचार सुनकर जी भंवर सी खा गया था अब ठीक हूँ। मैं पक्की हूँ। सेवा के काम में हम लोगों को भी ले लीजिए। आप लोग स्त्रियों के पास सहज ही नहीं पहुच सकते। हम लोग स्त्रियों में काम करेंगी।

चांदखां—करना, बहिन करना। मैं पहले अपने खास कार्यकर्ता सोमू को ठीक करलूँ, तब तुम लोगों का संगठन कर दिया जायगा। सोमू घंटे दो घंटे में ठीक हो जायगा।

चम्पा—अस्पताल में तो दवा ही नहीं है।

चाँदखाँ—करीमन दवा बना कर ला रही है न - वह अस्पताली दवा से किसी प्रकार गुण में कम नहीं है।

(*करीमन का दवा लिए हुए प्रवेश*)

चाँदखाँ—(*दवा लेकर जाते जाते*) इस समय हम लोग इस देशी दवा से बहुत काम निकालेंगे।

(*प्रस्थान*)

चम्पा—(*आँखों में आँसू झलक आते हैं*) करीमन, क्या इस साधारण सी चीज़ से इतना बड़ा रोग अच्छा हो जायगा ?

करीमन—अपने यहां की छोटी छोटी चीजें बड़े बड़े असर दिखलाने की शक्ति रखती है।

चम्पा—(*कंठ की छोटी सी हिलकी के साथ*) करीमन, चलो न हम लोग वहीं कुछ सेवा करने के लिए चलें।

करीमन—यह क्या कर रही हो ? सँभलो। वहां जाओगी तो लोग क्या कहेंगे ?

चम्पा—और यदि उनको कुछ हो गया तो ? चन्दू दादा हड़बड़ाए हुए थे। अवस्था शायद कुछ बुरी हो।

करीमन—सो बात नहीं है घबराओ मत। आओ घर में भूला भूलोगी ?

चम्पा—नहीं करीमन। बिलकुल नहीं। मुझको यह बीमारी हो जाय तो अच्छा।

करीमन—बावली हो गई हो क्या ? किसी के बीमार पड़ जाने से क्या कोई दूसरा अच्छा होता है ?

चम्पा—यदि उनको कुछ हो गया तो मैं मर जाऊँगी करीमन।

करीमन—इतने में ही उधर पड़ीं, चम्पी ! अरी, अपने मन का यह भाव भीतर ही रक्खो। सोमू दादा अच्छे हुए जाते हैं, परन्तु तुम्हारे मन की यह बात कहीं फैल गई तो बखेड़ा बहुत बढ़ जायगा। समझ गईं न ?

चम्पा—समझ गई, करीमन। चन्दू दादा के आते ही उनसे सब हाल ब्योरेवार अवश्य पूछना और मुझको बतलाना। लड़कियों का एक सेवादल उनसे आज ही बनवा लेना। मैं किसी न किसी तरह उनको एक वार देख लेना चाहती हूं।

करीमन—अच्छा, अच्छा। देखा जायगा। तबतक घरके काम काज से निबट लो।

चौथा दृश्य

[स्थान—बाँसी के बाहर पुल के नीचे नाला। अधेड़ अवस्था की दो स्त्रियां बग़ल में धोतियां दबाए नहाने के लिए आती है। समय प्रातःकाल के कुछ पीछे]

पहली—लो, यहीं होकर नहालो। नीचे की तरफ़ नाला बहुत गहरा है। वहां नहीं जायँगे।

दूसरी—अरी वहां नहीं जायंगे। दोनों किनारों के बड़े बड़े घने पेड़ पानी पर झुकने के लिए मिल गए हैं जिससे अँधेरा टिका रहता है। वह ठौर तो इन नए लड़के लड़कियों के लिए कुञ्ज है, बहिन कुञ्ज।

पहली—ऐसा विकट कलियुग आया है कि कहते नहीं बनता। हम लोगों ने भी लड़कपन देखा है। नाचा गाया है। कलोलें की हैं, परन्तु ऐसे सिर उघाड़े, मुँह फैलाए बेपर्दा होकर तो कभी नहीं मारी मारी फिरीं।

(दोनों नाले में उतर पड़ती हैं और एक पत्थर पर धोतियां अलग अलग रखकर नाले के भीतर वाले दो पत्थरों पर आमने सामने बैठ जाती हैं)

दूसरी—उस सोमेसुरा के साथ चम्पिया का प्रेम हो गया है, जानती हो न ! *(हँसती है)*

पहली—उस दिन वह ज़रासा बीमार पड़ा कि लड़कियों का सेवा दल बन गया ! जब देखो तब चम्पी खड़ी है वहां। पल पल पर दवा और सफाई, दवा और सफाई !

दूसरी—लड़कियों ने स्त्रियों में काम तो बहुत किया।

पहली—चम्पी ने क्या किया ? वह तो सुमेसुरा के पीछे भूत की तरह चिपटी थी। काम तो अस्पताल वालों का था।

दूसरी—और सच्ची तो यह है कि देवी देवताओं की पूजा चढ़ाई; काली माई का रथ निकाल कर गांव के बाहर सवारी करादी तब हुल्की गांव से गई, नहीं तो लाल और सफ़ेद दवा से क्या होना था ?

पहली—लाल दवा से बहिन सर्दी खांसी और फैल गई।

दूसरी—और तिसपर ये छोकरे छोकरीं कहती फिरती है कि सीड़ी हवा से सर्दी खाँसी फैली है, लाल दवाई से नहीं फैली है। सीड़ी हवा से कहीं सर्दी फैलते सुनी !

पहली--अरी, ये सब इतनी बौखला गई हैं कि देवी देवताओं के बलिदानों को रोकती हैं! हँसती हैं! अब की बार तो ये बच गईं। फिर कभी काली माई ने कोप किया तो ये न बचेंगी! न बचेंगी।

दूसरी--भगवान सब का भला करें। अपने मुँह से न कहो। जो होना है सो तो होगा ही।

पहली--(*हँसकर*) सुमेसुरा और चम्पी का ब्याह होगा क्या?

दूसरी--भाड़ में जायँ, हमें तुम्हें क्या करना है? अरी, जब उसके बाप बालाराम को ही कोई चिन्ता नहीं तो हमें तुम्हें क्या पड़ी है। देखती जाओ क्या क्या होता है।

(*दोनो नहाने लगती हैं*)

पहली--(*नहाते नहाते*) बालाराम ने तो उस सपेरे को डाके डलवाने के लिए पाल रक्खा है। अच्छा हो गया है तब भी पलंग तोड़े डाल रहा है। डाकू है, पूरा डाकू। उसकी आंखें देखीं!

दूसरी--आग लगे की टका टका सी बड़ी हैं बहिन। बालाराम डाके का माल गलवाता होगा। अब सपेरे से खुद डाके डलवायगा।

(*दोनों नहा धोकर, कपड़े पहिन लेती हैं, और कपड़े धोती हैं*)

पहली--थानेदार आया था सो फूंसा फाँसी करके ही चला गया। खा गया होगा कुछ?

दूसरी--क्या जानें? चम्पी इस सपेरे की सेवा बाप से भी अधिक करती है। कहती है हमारा राखी बन्द भाई है।

पहली--उसने सुमेसुरा को राखी नहीं बाँधी थी। (*हँसकर*) उसके साथ तो ब्याह करना है न।

दूसरी--तुम्हें कैसे मालूम?

पहली--गांव भर जानता है। ऐसी बातें कहीं छिपती हैं?

(*स्नान समाप्त कर दोनों का प्रस्थान*)

पांचवां दृश्य

[स्थान—बांसी बस्ती के बीच वाली सड़क पर बालाराम का घर। चम्पा पौर में बैठी हुई गा रही है। गीत की समाप्ति पर बालाराम और मेघराज का सड़क की एक दिशा से प्रवेश। चम्पा खड़ी हो जाती है। मेघराज अब बिलकुल स्वस्थ हो गया है। दोनों पौर में जाकर बैठ जाते हैं। चम्पा भी एक ओर बैठ जाती है। समय लगभग एक पहर दिन चढ़े।]

बालाराम—बेटी, मेघराज की इतनी बदनामी बस्ती भर में है कि जिसका ठिकाना नहीं। ऐसा लगता है जैसे इनके जीवन के प्रत्येक क्षण पर बस्ती वाले इनके साथ में रहे हों।

मेघराज—मेरा जीवन! मेरा जीवन!! दादा मेरे जीवन के ताने बाने बहुत रङ्ग बिरंगे और सम विषम हैं। परन्तु बस्ती वाले जो सोचते या कहते हैं वह ग़लत है।

चम्पा—तुम तो भैया बहुत पढ़े लिखे हो, फिर यह सपेरे का रूपक क्यों धर लिया था?

बालाराम—पञ्चायत के और सहयोग समिति के दफ्तर में, जहां जहां इनको काम दिलाने के लिए लेगया, वहां सबने यही सवाल किया।

चम्पा—व्यर्थ इधर उधर भटक रहे हैं। दादा, अपने यहां ही तो बहुत काम हैं। यहीं रहें और जो कुछ हम लोग पहिनते ओढ़ते और खाते हैं सो ये भी पहिनें, ओढ़ें और खाएँ।

बालाराम—मैं तो कई बार कह चुका हूँ।

मेघराज—बहिन के घर का इस प्रकार खाना पहिनना अच्छा नहीं। *(मुस्कराकर)* चम्पी बहिन, इतने दिन हो गए मैंने अभी तक तुम्हारी राखी की दक्षिणा ही नहीं चुका पाई!

चम्पा—(*आंख तरेरकर*) मेरा वह ऋण क्या जन्म भर चढ़ा रहेगा ?

मेघराज—न चुका पाया तो अगले सावन तक तो अवश्य ही चढ़ा रहेगा। फिर दूसरा आरम्भ हो जायगा। मैं तन और मन का परिश्रम करके, अन्य लोगों से पसीने का कमाकर तुम्हारा भाई कहलाने योग्य बनना चाहता हूँ।

बलाराम—इनको सोमेश्वर ने काम दिला दिया है। ये लिखने पढ़ने के काम के अलावा शरीर का भी काम करना चाहते हैं।

चम्पा—(*हँसकर*) गेंती फावड़े का ?

मेघराज—यह भी कर सकता हूँ और करूँगा। परन्तु अभी तो सबेरे और सांझ अखाड़े में बालकों को कुश्ती मलखंब इत्यादि सिखाने का काम करूंगा। मैंने यह बहुत किया है।

चम्पा—(*हँसकर*) और क्या बच्चों को सांप पकड़ने का भी काम सिखलाओगे भैया ?

मेघराज—वह तो बहिन मैंने सदा के लिए त्याग दिया ?

चम्पा—आरम्भ ही क्यों किया था ?

मेघराज—मैं छुटपन में बड़ा अतातायी था। सांप, बिच्छू, मेंढक, बन्दर इत्यादि के पकड़ने में लगा रहता था, इसीलिए पढ़ा लिखा कम। यद्यपि माता पिता ने ऊँची शिक्षा दिलाने का बहुत प्रयत्न किया। मैं एक दिन घर से निकल भागा और सपेरा बनने में मुझको सब से अधिक आनन्द मिला। जगह जगह घूमना, जङ्गलों, पहाड़ो में बिचरना, जादू के खेल दिखलाकर कौतूक जगाना और शान्त करना, घर घर के जीवन की निरख परख और मन चाहे पैसे कमाना।

चम्पा—क्या किसी दिन फिर सपेरे बन जाओगे ?

मेघराज—(*हँसकर*) डाकुओं ने ठोक ठोक कर सपेरे को मेरे भीतर से हमेशा के लिए रफूचक्कर कर दिया, और बहिन की राखी ने स्थायी जीवन के खूँटे से मुझको बांध दिया।

बालाराम—और इस पर भी हमारे गांव के लोग तुमको सन्देह की दृष्टि से देखते हैं।

मेघराज—समाज में सपेरे का सम्मान ही क्या हो सकता है? और फिर ये लोग मुझको डाकुओं में से छुटाकर लाए थे।

बालाराम—(*आँख का एक कोना दबाकर*) और फिर तुम्हारे ही सरीखे चेहरे मोहरे वाले ने उन भयङ्कर डाकुओं से मेरी और मेरी लड़की तथा घर गृहस्ती की रक्षा की।

चम्पा—(*ज़रा चिढ़कर*) दादा, आपका यह कहना ही तो भैया पर विपद ढारहा है। डाकू दाढियाँ बाँधे थे। उनके दुर्व्यवहार ने आपको गहरी नींद से जगाया। इतना समय कहां था जो आप चेहरे-मोहरे परखते?

बालाराम—सच बात कहूं?—तुम्हीं ने तो 'भैया' और 'राखी' और न जाने क्या कह कहकर उस समय मुझको अचेत नहीं होने दिया।

चम्पा—(*अनुनय के साथ*) हाथ जोड़ती हूँ दादा, इनकी स्थिति को और अधिक मत बिगड़ने दीजिए। लोग चाहे जिसके लिए चाहे कुछ बक उठते हैं। उनकी बातों की उपेक्षा करिए और अपने शब्दों पर काबू रखिए। आपकी ही बात को पकड़ पकड़कर लोग बढ़ाने-चढ़ाते हैं और अपने अनुमानों को सत्य का रूप दे देकर चाहे जो कुछ कहते फिरते हैं।

(*बालाराम सोचने लगता है*)

बालाराम—हूं—ऊँ।

मेघराज—अब तो मुझको काम मिल गया है। कोई बात नहीं। सोमेश्वर भाई मेरे पक्षपाती हैं। वे इस गपशप का प्रतिवाद करेंगे और

मेरा परिश्रम तथा रहन-सहन गाँव वालों को शीघ्र विश्वास दिला देगा कि मैं ख़तरनाक नहीं हूं।

बालाराम—सोमेश्वर का स्वयं कुछ बहुत प्रभाव गाँव में नहीं है, इसलिए सब काम अपने बूते करना।

मेघराज—सोमेश्वर बहुत अच्छे पुरुष हैं। उन्होंने हैजे के दिनों में जनता की बहुत सेवा की। यहाँ तक कि अपना प्राण सङ्कट में डाला। ईश्वर की कृपा से बाल बाल बचे। जनता उनका बहुत आदर करती है।

(चम्पा दूसरी ओर देखने लगती है)

बालाराम—होगा। अकेले सोमेश्वर ने थोड़े ही सब कुछ किया। और लड़कों तथा लड़कियों ने भी बहुत श्रम किया था।

मेघराज—मुझको मालूम है—बहिन चम्पा ने भी स्त्रियों में बहुत काम किया। क्या करूँ उस समय बहुत दुर्बल था नहीं तो मैं भी अपनी जड़ी-बूटियों का कुछ प्रयोग दिखलाता।

चम्पा—चलिए, अब भोजन कर लीजिए।

(वे लोग किवाड़ बन्द करके भीतर जाते हैं)

छठवां दृश्य

[*स्थान वही। समय तीसरा पहर। थानेदार का छः सिपाहियों सहित बालाराम के घर के सामने प्रवेश। इन छः में पांच वे सिपाही हैं जो कजरियों के मेले में बाँसी गांव में थे।*]

थानेदार—*(उन पांच सिपाहियों से)* तुम लोग अभी जाओ। अस्पताल के अहाते में ठहरना। अटक पड़ने पर बुला लूँगा।

[*उन पांचों सिपाहियों का प्रस्थान*]

थानेदार—(*चिल्लाकर*) बालाराम जी, किवाड़ खोलिए। ज़रा इधर आइए।

(*बालाराम किवाड़ खोलकर बाहर आता है*)

बालाराम—नमस्ते थानेदार साहब, आइए।

थानेदार—यहीं पेड़ के नीचे बैठूंगा। कुर्सियां भिजवाइए।

(*नौकर कुर्सियाँ रखता है। थानेदार तथा बालाराम बैठते हैं। सिपाही खड़ा रहता है*)

बालाराम—कैसे कष्ट किया? कहिए, उन डाकुओं का कुछ पता चला?

थानेदार—पता कहां से चले? आप लोग पुलिस की सहायता करें तो पाताल की भी जड़ तो मैं खोद लाऊँ।

बालाराम—जो कुछ हमको मालूम था, पहले ही बतला दिया। यदि कुछ बाकी रह गया हो तो पूछिए, बतलाने को तैयार हैं।

थानेदार—(*गम्भीरता पूर्वक*) आपकी लड़की छिपा रही है। उसको साफ़ साफ़ बतलाना चाहिए। बतलाना पड़ेगा। मेघराज सपेरा अब तो बिलकुल अच्छा होगया है। बुलाइए कहाँ है। उसका बयान लेना है।

बालाराम—खाना खाने के बाद कुछ पढ़ने लगा था। बुलवाता हूँ।

(*नौकर से बुलवाता है। मेघराज का प्रवेश*)

थानेदार—(*मेघराज को ऊपर से नीचे देखकर*) तुम कहां के रहने वाले हो? सपेरे कब से हुए? सावन के दिन तुमको झांसी में किसने और क्यों राखी बांधी? कजरियों के मेले के समय तुम्हारे साथ दूसरा सपेरा कौन था? उसी मेले में, तुमने या तुम्हारे साथी ने पुलिस के पांच सिपाहियों को भङ्ग पिलाकर बेहोश किया? तुमको डाकुओं ने पकड़ कर उस रात क्यों बांधा? इन सवालों का जवाब दो।

(*चम्पा किवाड़ों की आड़ मे आ जाती है*)

मेघराज—मैं आगरा ज़िले का रहने वाला हूँ। छुटपन से ही साँप-बिच्छू अच्छे लगे और देश-प्रदेश घूमना मन को भाया इसलिए सपेरा बन गया। चम्पा बहिन ने सावन के दिन मुझको राखी बांधी। एक दिन पहले मैंने अपने खेल इसी स्थान पर दिखलाए थे। चम्पा को पसन्द आए। उसने मुझको अपना भाई बना लिया। कजरियों के मेले के समय किसने किसको क्या खिलाया-पिलाया सो मुझको मालूम नहीं। मेले के बाद मैं अपने डेरे की ओर पुल पर से जारहा था तब डाकुओं ने मुझको पकड़ कर बांध लिया। क्यों बाँध लिया, यह वे ही जानें।

थानेदार—(*दांत मीसकर*) उन पांच सिपाहियों को तुम्हारे साथी ने भङ्ग नहीं पिलाई?

मेघराज—सिपाही जानें या जिसने पिलाई-खिलाई हो वह जाने।

थानेदार—(*सिपाही से*) अस्पताल से उन पांचों सिपाहियों को लिवा लाओ।

[सड़क पर चलने वालों की भीड़ इकट्ठा होना चाहती है, परन्तु थानेदार उन लोगों को हटा देता है]

(सिपाही का प्रस्थान)

थानेदार—(*बालाराम से*) मैं आपकी लड़की का बयान लूँगा। बुलाइए उसको।

बालाराम—वह यहां नहीं आ सकती। पौर में होकर पूछ लीजिए वह खड़ी है।

थानेदार—(*पौर की ओर मुँह करके*) जिस समय डाकू तुम्हारे सोने के कमरे में थे उस समय वे बन्दूकें लिए हुए थे?

चम्पा—जी हां।

थानेदार—एक ने बन्दूक़ तान कर तुम्हारे पिता को धमकाया था? और, चाभियां मांगी थीं?

चम्पा—मैं उसी समय जागी थी।

थानेदार—तुमने सावन के दिन मेघराज को राखी बांधी थी?

चम्पा—अवश्य।

थानेदार—तुमने अपने कमरे में कितने आदमियों को देखा था?

चम्पा—तीन को।

थानेदार—उनमें एक तुम्हारी छाती पर बन्दूक़ सीधी किए था?

चम्पा—जी।

थानेदार—उसके हाथ में राखी बँधी थी?

चम्पा—मुझको याद नहीं। मैंने नहीं देखी।

थानेदार—(*आंखें तरेरकर और मुस्कराकर*) हां! अपनी बांधी राखी तुमने नहीं देखी! तुमने उससे भाई कह कर रक्षा मांगी थी?

चम्पा—जी हां।

थानेदार—देखो, यही मेघराज था न वह जिससे तुमने रक्षा चाही थी?

चम्पा—जी नहीं।

थानेदार—जब तुमने उस डाकू से रक्षा मांगी तब वह छाती पर बन्दूक़ किए था, फिर तुमको पहिचानते ही उसने बन्दूक ऊंची कर ली और अपने साथी को धमकाया और कहा कि ग़लत जगह आए हो, चलो हटो यहां से, और उन दोनों में कुछ झगड़ा भी हो गया?

चम्पा—जी नहीं। पीछे के मुहल्ले वालों की बन्दूकें उसी समय चल पड़ीं, और वे लोग डर के मारे भाग गए।

थानेदार—(*क्रुद्ध स्वर में*) मूर्ख लड़की, होश में बात कर। डाके का अपराध किसी व्यक्ति के खिलाफ़ नहीं होता है, क़ानून के खिलाफ़

होता है। वह देश भर को चिनौती है। तुम्हारे बाप बालाराम जी ने हमको सब बतलाया था।

बालाराम—मेरी जैसी कुछ कल्पना थी वही मैंने आपको सुनाई थी। संभव है वह मेरा भ्रम ही रहा हो।

थानेदार—(*कड़ककर*) भ्रम! हमको क़ानून और अफ़सरों का आदेश है कि हम आप लोगों के साथ शिष्टता का व्यवहार करें, परन्तु अब हमको मजबूर होकर कर्कशता के साथ काम लेना पड़ेगा। हम लड़की को थाने में पकड़ ले जायंगे। वहां बयान लेंगे और वहीं इस मेघराज का। यह हमारी भलमनसाहत थी जो हम दूसरी बार आपके घर पर आए। उन सिपाहियों के आते ही हम इन दोनों को पकड़कर ले जायंगे।

बालाराम—मैं अपनी पञ्चायत में फरियाद करूँगा। आप ऐसा नहीं कर सकेंगे।

थानेदार—मैं पञ्चायत की परवाह नहीं करता। पञ्चायत मेरे इस काम में दख़ल नहीं दे सकती। तैयार हो जाओ दोनों। (*थानेदार पकड़ने के लिए उठता है*) इस नासमझ और हठीली लड़की को देखता हूं। मालूम होता है इस मेघराज सपेरे के साथ भाई चारे का संबन्ध नहीं है, बल्कि, दूसरी तरह का, अनुचित सम्बन्ध है।

मेघराज—(*ऊंचे स्वर में*) ख़बरदार थानेदार साहब, जो मुँह से ऐसे शब्द निकाले! आप मेरी बहिन को थाने पर नहीं ले जा सकेंगे।

थानेदार—(*जेब से पिस्तौल निकाल कर*) तुमको तो इसी समय पकड़ता हूँ। देखूँ रोकने के लिए कौन सामने आता है?

चम्पा—(*पौर से बाहर निकल कर*) मैं सामने आती हूं। चलिए, जहां ले चलना हो। कोई भी धमकी मुझको मनचाहा कहलाने के लिए विवश नहीं कर सकती। मैं तैयार हूँ। आप मेरे भाई को नहीं सता

मेघराज - नहीं बहिन भीतर जाओ। इस एक और पाप को अपनी जीवन--कहानी में नहीं जुड़ने दूंगा। जाओ बहिन। सुनिए थानेदार साहब, मैं डाकुओं में था। मैंने ही डाकुओं के सरदार की रोकथाम की थी। यह मेरी धर्म की बहिन मुझको बचाना चाहती है, इसलिए ग़लती कर रही है। मुझको पकड़ लीजिए। उस पर से पिस्तौल को हटाइये।

(थानेदार पिस्तौल जेब में रख लेता है)

थानेदार —सिपाहियों को भङ्ग किसने पिलाई थी?

मेघराज—पिलाई नहीं थी—खिलाई थी। डाकुओं के सरदार ने खिलाई थी। मैं साथ में था।

चम्पा--(क्षुब्ध स्वर में) क्या बकते हो भैया? पिस्तौल के डरसे क्या ऐसा झूठ बोला जाता है? ये नहीं थे, ये नहीं थे।

बालाराम--जाओ भीतर।

थानेदार—तुम डाकुओं में शामिल कब हुए थे?

मेघराज—केवल दो दिन पहले। भ्रमण करता आ रहा था। उन्होंने उस जंगल में पकड़ लिया और फुसला बहका कर अपना जासूस बनाने के लिए मुझको राज़ी कर लिया। मुझको इस काम में सनसनी दिखलाई पड़ी इसलिए शामिल हो गया?

थानेदार—कभी और कहीं डाका डाला?

मेघराज—कभी नहीं।

थानेदार--डाकुओं के नाम क्या थे? वे कहां के थे?

मेघराज—यह मुझको मालूम नहीं हो पाया। वे लोग बनावटी नाम रक्खे थे जैसे सोम, मंगल, शनिश्चर इत्यादि।

(वह सिपाही उन पांचों सिपाहियों को लेकर आता है)

मेघराज—मैं सबको नहीं पहिचानता हूँ। केवल इनको, जो बिल्ला लगाए हैं, चीन्ह सकता हूँ। जमादार हैं न आप ?

जमदार—सो ?

थानेदार—ठहरो। बतलाओ मेघराज उस दिन की घटना से इन जमादार का क्या सम्बन्ध है ?

मेघराज—सरदार ने इन्हीं को भंग का गोला दिया था जो इन्होंने खाया था और अपने साथी सिपाहियों को बांटा था।

जमादार—झूठ, बिलकुल सफ़ेद झूठ।

चम्पा—मैंने पहले ही कहा था। सब झूठ है।

थानेदार—चुप, चुप! जमादार, तुमने उस दिन कजरियों के मेले में इस आदमी को देखा था? इसका नाम मेघराज है। इसके साथ सपेरे वेश में एक और आदमी था।

जमादार—मैंने नहीं देखा। क्यों सिपाहियो, तुम लोगों ने देखा था ?

चारों सिपाही—(*एक साथ*) हम लोगों ने नहीं देखा।

(*थानेदार मेघराज की ओर देखता है*)

थानेदार—तुमको सरकारी गवाह बनाया जा सकता है।

मेघराज—मुझको सरकारी गवाह नहीं बनना है। मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सच ही सच है।

जमादार—बिलकुल झूठ है हुजूर।

चंपा—बिलकुल झूठ।

बालाराम—जा भीतर मूर्ख।

[*चम्पा पौर के किवाड़ों के पास खड़ी होकर उत्सुकता के साथ मेघराज को देखती है और उसको निवारण का संकेत करती है*]

थानेदार—सेठ जी, लड़की को समझा दीजिए कि आसामी सच बयान कर रहा है, अब उसके झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं।

(सोमेश्वर और चाँदख़ाँ का प्रवेश। अभिवादन के पश्चात थानेदार उन लोगों को कुर्सियों पर बिठलाता है)

चाँदख़ाँ—क्या बात है मेघराज?

मेघराज—कुछ नहीं—मैं डाकुओं में था। जब यहां से सब के सब भागे, मार्ग में सरदार और उसके साथियों ने मुझको पकड़ कर मारा और बांध लिया। एक पेड़ से जकड़ डालने के बाद वे मुझको मार डालना चाहते थे कि इतने में आप लोग बन्दूकें चलाते आ गए और मुझको बचाकर ले आए। मेरी बहिन ने मेरी अथक सेवा सुश्रूषा करके मुझको स्वस्थ कर दिया। डाकुओं का क्षणिक साथ देने के लिए अब जो कुछ मेरा होना हो सो हो। मैं सब प्रकार के दण्ड के लिए तैयार हूँ।

(सोमेश्वर पोर की ओर चम्पा को देखता है। वह ज़रा पीछे हट जाती है)

चंपा—*(पौर में से ऊंचे स्वर में)* मेघराज का दिमाग़ फिर गया है। ये झूठ बोलते हैं। ये डाकुओं में नहीं थे। मुझको सोलह आना स्मरण है। मेरे दादा इस विषय में भूल रहे हैं।

बालाराम—लड़की का कहना ठीक है।

सोमेश्वर—थानेदार साहब, इसमें तो मेघराज का कोई दोष नहीं। मान लीजिए कि ये उस रात डाकुओं के साथ आए भी तो इन्होंने तो अपने सत्कर्म से न केवल इसी घर को बचाया बल्कि पूरे गांव की रक्षा की। इनका क्या अपराध है। आप इन्हें क्यों हैरान करते हैं?

थानेदार—*(फुसलाहट के ढंग पर)* आपने और चांदख़ां साहब ने हैजे के दिनों में कमाल की जन-सेवा की। ललितपुर भरमें, सारे देहात में और दूर दूर तक आपका जय जयकार हो रहा है।

सोमेश्वर—थानेदार साहब, हम ग्रामीणों को जय जयकार नहीं चाहिए। इसके भूखे प्यासे तो शहरों के लोग होते हैं। हम लोग तो दिन भर अपना काम करते हैं और रात को सो जाते हैं।

थानेदार--आप क्या साम्यवादी हैं?

सोमेश्वर—हम लोग सघवाद, साम्यवाद या कोई वाद नहीं जानते। हम लोग तो केवल एक ग्राम-वाद जानते हैं। अपने गाँव को कैसे सुधारें, कैसे आगे बढ़ावें, कैसे अपनी उन्नति और रक्षा करें, कैसे हमारा हर एक व्यक्ति अपने गुणों को उभारे, केवल इतना जानते हैं। इसको चाहे जौनसा वाद समझिए।

थानेदार—खैर, ठीक है। आप क्या इस लड़की चम्पा को नहीं समझा सकते?—आप का कहना तो वह मानती नहीं दिखती--कि सच सच बयान कर दे।

(सोमेश्वर का चेहरा लाल हो जाता है)

चम्पा—(*रुद्ध स्वर में*) सब सच सच तो कह दिया। मेघराज भैया को थानेदार पिस्तौल दिखलाकर अपराध स्वीकार करवा रहे हैं।

(रोती हुई भीतर चली जाती है)

सोमेश्वर—पिस्तौल?

चाँदखाँ—पिस्तौल थानेदार साहब!

थानेदार—(*झेंपकर*) नहीं साहब। मेघराज, क्या तुम सच सच बयान नहीं कर रहे थे।

मेघराज—बिलकुल सच। न मुझको पिस्तौल का डर है और न सरकारी गवाह बनने का लोभ। मैं तो अपने आप सब सच कह रहा हूँ।

चाँदखाँ—मगर इन्होंने पिस्तौल दिखलाई थी? या पिस्तौल की धमकी दी थी? वह लड़की झूठ नहीं बोल सकती।

मेघराज—(*उपेक्षा के साथ*) काले साँप से पिस्तौल तो छोटी ही होती है। जब मैं उससे नहीं डरा तो पिस्तौल से डरता ही क्यों ?

सोमेश्वर—इन्होंने पिस्तौल अवश्य दिखलाई होगी।

थानेदार—जी हाँ, मैंने पिस्तौल निकाली थी, परन्तु उस समय जब मैंने देखा कि अपराधी की गिरफ्तारी में बाधा डाली जा रही है तब।

चाँदख़ाँ—अच्छा, अब आप क्या करना चाहते हैं ?

थानेदार—मैं मेघराज को गिरफ्तार करके ले जाऊँगा। अपने बयान से ही ये डाकुओं के गिरोही होने के अपराधी हो जाते हैं।

सोमेश्वर—कोई प्रमाण ? सबूत ?

थानेदार— बालाराम जी और उनकी लड़की।

बालाराम—मैंने पहले ही कह दिया कि मैं पहिचान नहीं सका, और लड़की स्पष्ट कह रही है कि मेघराज गिरोह में न था।

सोमेश्वर—तब आप अकेले मेघराज के बयान पर कैसे मुक़द्दमा चलायँगे ?

जमादार—हम पांचों हलफ़ से, चाहे जैसी सौगन्ध से कहेंगे कि कजरियों की भीड़ में हम लोगों ने इसको या इसके किसी भी साथी को नहीं देखा।

थानेदार—(*सोमेश्वर इत्यादि से*) आप लोगो ने उस दिन कहा था कि सिपाही देर में आए थे, ये जब आए तब इनकी टांगें और बोली लड़खड़ा रही थीं और नशा पिए मालूम होते थे।

चाँदख़ाँ—हम लोगां ने यह तो नहीं कहा था कि ये लोग कोई नशा किए थे।

सोमेश्वर—सम्भव है दिन भर के थके मांदे होने के कारण गहरे सो गए और कच्ची नीद जागने के कारण लड़खड़ाते हुए आए हों।

जमादार—(*उमंग के साथ*) हम लोगों ने भांग नहीं खाई थी साहब। इस मेघराज का तो मत्था खराब हो गया है, मड़ गया है जो मुफ्त में अपने को मिटाना चाहता है और हमारा भी अड्डा साफ कर देना चाहता है।

चाँदखाँ—आप क्यों हैरान होते हैं, और क्यों दूसरों को परेशान करते हैं थानेदार साहब?

थानेदार—(*आह को दबाकर*) मैं अपने अफ़सरों को क्या जवाब दूंगा? हैजे के कारण मै जांच पड़ताल के लिए इतने दिन नहीं आसका; दूसरे, मेघराज बीमार भी था बोल ही नहीं सकता था। तो भी अफ़सर नाराज़ हुए। चालान तो मुझको मेघराज का करना ही पड़ेगा, पीछे भले ही छूट जाय।

चाँदखाँ—ज़मानत ले लीजिए। हम दोनों ज़मानत देने के लिए तैयार हैं।

थानेदार—(*फिर एक आह को दबाकर*) लिए लेता हू ज़मानत साहब। पर आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इन्होंने जो कुछ बयान दिया वह पिस्तौल की धमकी पर नहीं दिया था।

चाँदखाँ—खैर, ज़मानत लीजिए।

(*थानेदार, चांदखाँ और सोमेश्वर की ज़मानत पर मेघराज को छोड़ता है।*)

सातवां दृश्य

[*स्थान—बाँसी के बाहर पुल से नीचे की ओर। समय प्रातःकाल से थोड़े ही समय पीछे। चम्पा पेड़ों की झुरमुट वाले नाले के किनारे पर नहाने के लिए एक गीत गाती हुई आती है। चम्पा के हाथ में लोटा है और बगल में धोती। एक पेड़ के पीछे से सोमेश्वर का प्रवेश।*]

चम्पा—(*मुस्कराकर*) कैसे चोर जैसे आ रहे हो !

सोमेश्वर—बड़ी कठिनाई से आज एकान्त प्राप्त कर पाया है । यहां भी लोटे से नहाओगी ! यहां तो तैरने लायक पानी है । बहुत गहरा ।

चम्पा—तभी तो लोटा लाई हूं । मैं तैरना नहीं जानती ।

सोमेश्वर—कुछ दुस्साध्य नहीं । दो दिन में आ सकता है । सिखलाने वाला चाहिए ।

चम्पा—(*आँखें तरेरकर*) तुम्हारा नाम ले लेकर यों ही कुछ लड़कियां मुझको ताने मारती हैं । फिर तो मेरे मरने पर ही बन आयगी ।

सोमेश्वर—करीमन कुछ कहती होगी ?

चम्पा—राम, राम । उस जैसी बड़े मन वाली लड़की तो गांव में दूसरी है ही नहीं । और लड़कियां तरह तरह की बातें करती हैं ।

सोमेश्वर—क्या कहती हैं ?

चम्पा—(*मुस्कराकर*) पूरा पुरान सुनाने बैठूं तो. दो दिन लग जायेंगे ।

सोमेश्वर—बैठी कहां हो ? तुम तो खड़ी हो ।

चम्पा—(*गंभीरता के साथ*) काहे के लिए आए तुम अकेले में यहाँ ? कोई देख लेगा तो क्या कितनी विपद आयगी ?

सोमेश्वर—आधी घड़ी बाद चला जाऊँगा । घर पर आने के लिए तुमने मना ही कर दिया है । (*उमंग के साथ*) कहो तो आऊँ ?

चम्पा—कदापि नहीं । घर के सामने से भी न निकलना । दादा को कुछ सन्देह हो गया है । उनका मन कुछ फिरा फिरा-सा दिखता है । मैं उन्हें डरती हूं ।

सोमेश्वर—इसी प्रसङ्ग पर चर्चा करने के लिए किसी प्रकार आज यह अवसर हाथ में ला सका हूँ । मै दादा से स्पष्ट कह देना चाहता हूँ ।

जातपांत की कोई बाधा नहीं है। मैं क्यों न जी खोलकर उनसे कह दूँ और उनकी असीस मांग लूँ ?

चम्पा—नहीं, नहीं, ऐसा मत करना। अभी समय नहीं आया है। भूलकर भी मत कहना।

सोमेश्वर—जिन दिनों मुझे हैज़ा हो गया तुमको रोग-शय्या पर से देखते ही न मालूम कितना स्वास्थ्य पा लेता था। भीतर से जीवित रहने की दृढ़ कामना प्रबलता के साथ उठी और मैं बच गया, नहीं तो कोरी दवा मुझको नहीं बचा सकती थी।

चम्पा—चन्दू दादा ने आपकी बहुत सेवा की और करीमन ने भी। मैं तो दूर से एकाध क्षण के लिए देख भर लेती थी।

सोमेश्वर—वे ही क्षण मुझको उस कठोर समय में किसी महान स्वर्ग का अनुभव करा देते थे। मेरे हृदय-सिंहासन की देवी, मेरी जन्म-सहचरी बनकर मेरे जीवन को उजाले से भरदो।

चम्पा—(*सहमकर*) धीरे धीरे—बात करो। स्त्री-पुरुष नहाने के लिए पुल के पास आते ही होंगे। (*इसी समय मेघराज पुल पर आकर बैठ जाता है*) वह देखो मेघराज भैया पुल पर आ बैठे हैं, अब तुम जाओ। फिर कभी मिलूँगी।

सोमेश्वर—मेघराज की कृपा से तो मैं इस समय तुम से मिल ही पाया हूं।

चम्पा—अच्छा ! तभी उन्होंने आज मुझको जल्दी जगाया और अकेले में कहा कि पेड़ों की इस झुरमुट के पास पानी अच्छा और शुद्ध है मुझको यहीं आकर नहाना चाहिए।

सोमेश्वर—मैंने ही कहलवाया था। वे मेरे बड़े मित्र हो गए हैं, इस समय वे पहरेदार बनकर पुल पर बैठे हैं; किसी को भी न आने देगें।

चम्पा—अर्थात यदि कोई यहां आना चाहेगा तो उसको वहीं रोककर बिठला लेंगे !

सोमेश्वर—(*मुस्कराकर*) मेघराज जादूगर हैं जादूगर । जादू के बल से आने वाले को भुलावे में डाल देंगे ।

चम्पा—(*कुछ उदास होकर*) तो उनको भी सब हाल मालूम हो गया है ?

सोमेश्वर—बुरा ही क्या हुआ ? मुझको उनकी आस्था से बड़ा सहारा मिला है ।

चम्पा—(*काँपते गले से*) तुमने अच्छा नहीं किया । मैं उनको अपना बड़ा भाई मानती हूँ । उनसे तुम्हें कुछ नहीं कहना चाहिए था ।

सोमेश्वर—(*अनुनय के साथ*) सोचो, मै करता ही क्या ? किस प्रकार तुम्हारे पास अपना संदेसा भेजता ?

चम्पा—चिट्ठी भेज सकते थे ।

सोमेश्वर—किसके हाथ भेज सकता ? डाक मे भेजता तो दादा के हाथ में पड़ जाती । मै तो चाहता हूँ कि उनको साफ़ साफ़ मालूम हो जाय, परन्तु तुम्हारे भय के मारे मै चिट्ठी का साधन काम में नहीं लाया । इसके सिवाय और कुछ भी नहीं कर सकता था ।

चम्पा—अब जो हुआ सो हुआ । आगे संभलकर चलना । बहुत बातें हो गईं । अब तुम जाओ । मैं नहाऊँगी । देर हो जायगी तो दादा कुछ कह बैठेंगे ।

सोमेश्वर—मेघराज के साथ चली जाना ।

चम्पा—कभी नहीं । मैं मुँह नहीं दिखला सकूँगी । तुम उनको अपने साथ लिए जाओ । जाओ ।

सोमेश्वर—फिर कब मिलूँ ? और, क्या करूँ ?

चम्पा--अभी नहीं मिलना है और न कुछ करना है समय पर ही सब कुछ होगा।

सोमेश्वर—(*प्रसन्न होकर*) अस्तु, मेरे लिए इतना आश्वासन ही बहुत है।

चम्पा—(*मुस्कराकर*) जाओ। तुम बहुत बातूनी हो।

सोमेश्वर—(*जाते जाते*) नमस्ते, प्रभात की तारिका।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान झांसी के मध्य की सड़क पर बालाराम का घर । दरवाज़े खुले हुए हैं । सड़क पर और अगलबगल चहलपहल है । घर के सामने एक कुर्सी पर बालाराम बैठा हुआ है, दूसरी पर मेघराज । बालाराम हुक्का पी रहा है । समय सूर्यास्त के पहले]

मेघराज—दादा, तीसरे दिन जवारे निकलेंगे । बहुत अच्छे जमे हैं । रंग सोने का सा है, अबकी साल चैत की फ़सल अच्छी होने के लक्षण हैं ।

बालाराम—हूं—हां । कातिक की फ़सल भी अच्छी आ रही है ।

मेघराज—कजरियां खरे सोने के रंग की खोंटी गई थीं । दादा, एक विनती है ।

बालाराम—कहो; तुम्हारे मुक़द्दमें में पुलिस की अन्तिम रिपोर्ट अभी कुछ नहीं आई ? दिन तो बहुत हो गए हैं ।

मेघराज—वह तो दादा गांव-पञ्चायत की मार्फ़त आ जायगी ।

बालाराम—मुक़द्दमा चल ही नहीं सकेगा ।

मेघराज—मैं उसके सम्बन्ध में विनती नहीं कर रहा था ।

बालाराम—(*हुक्का मुँह से हटाकर*) तब और क्या बात है ?

मेघराज —बहिन के विषय में कुछ कहना चाहता हूँ ।

बालाराम—(*हुक्का नीचे रखकर*) क्या ?

मेघराज—मैंने अपना घर द्वार छोड़ दिया । मां बाप छोड़े । आपको अपना पिता और चम्पा को निज बहिन से बढ़कर मानता हूँ । उसके विवाह का प्रबन्ध होना चाहिए ।

बालाराम—(*हुक्का फिर से उठाकर*) मैं प्रबन्ध कर रहा हूं । चुप नहीं बैठा हूँ । इस साल अगहन में, बहुत करके ब्याह पञ्चमी के दिन विवाह के लिए मुहूर्त सुधवाऊँगा ।

मेघराज—(*कुछ डरता सा*) सगाई कहां होगी ?

बालाराम—ललितपूर में; एक अच्छे घराने में । लड़का पढ़ा लिखा और स्वस्थ है ।

(*मेघराज मुँह लटका लेता है*)

मेघराज—(*उदास भाव से*) हूं ।

बालाराम—तुम जब लड़के को देखोगे, प्रसन्न होगे ।

मेघराज—(*साहस करके*) मेरे मन में कुछ और है दादा ।

बालाराम—क्या ? कहो न ।

मेघराज—मैं बहिन की सगाई सोमेश्वर के साथ करना चाहता हूं ।

बालाराम—(*हुक्का नीचे रखकर, त्योरी चढ़ाकर*) सोमेसुरा के साथ ! जिसके घर सवेरे खाने को है तो शाम को नहीं और शाम को है तो सवेरे को नहीं ! क्या उसने तुमसे कहा ?

मेघराज—वे क्यों कहने चले ? मैंने सब कुछ सोच-समझकर और देख परखकर ही कहा ।

बालाराम—सोच-समझकर और देख परखकर ! यह सब क्या कर रहे हो ? यह नहीं हो सकता। असंभव है। चम्पी को मैं जन्म भर भूखों नहीं मरने देना चाहता हूँ। और फिर गांव के गांव में रोना कलपना।

मेघराज—सोमेश्वर बहुत स्वस्थ, पढ़े लिखे, सुन्दर और शीलवान हैं दादा, आपको इस संबंध पर कभी नहीं पछताना पड़ेगा।

बालाराम—सोचूँगा। जवारे आजसे तीसरे दिन निकलेंगे ?—हां। अच्छा मेघराज, कोई अनहोनी तो नहीं हो गई है ? सच सच बतलाना।

मेघराज—मैं झूठ नहीं बोलूँगा और फिर बहिन के संबन्ध में झूठ ! मुझको नरक में भी ठौर नहीं मिलेगा। दादा, सच मानिए, मेरी बहिन हीरा सी है और सोमेश्वर मोती सा स्वच्छ और आबदार है। परन्तु यह सम्बन्ध हो जाना चाहिए। दोनों आजन्म सुखी रहेंगे। विश्वास करिए।

बालाराम—मैं दशहरे के बाद अपना निश्चय बतलाऊंगा। इस बीच में मुझको एक जगह बाहर जाना है।

(सोमेश्वर का प्रवेश। मेघराज कुर्सी छोड़ देता है।)

मेघराज—आइए भाई सोमेश्वर जी।

सोमेश्वर—दादा, मेघराज जी के मामले में पुलिस की अन्तिम रिपोर्ट पत्र भवन में अभी अभी आई है। कोई भी प्रमाण इनके विरुद्ध न होने के कारण मामला नहीं चलाया जायगा। मुझको और चांदखाँ को भी सूचना दी गई है कि ज़मानत काट दी गई और मेघराज जी को छोड़ दिया गया।

(मेघराज सोमेश्वर को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है और बालाराम के पैर छूता है)

मेघराज—आपका आशीर्वाद है, दादा। बहिन को सम्वाद सुना आऊं। *(भीतर जाता है)*

बालाराम -बैठो सोमू। *(सोमेश्वर कुर्सी पर बैठ जाता है)*

सोमेश्वर—दादा, हम लोगों ने अपने सेवादल को खूब सङ्गठित किया है। सरकारसे बन्दूकें भी मिलेंगीं। हम लोग क़वायद परेड सीखेंगे। सब लोगों के, ख़ास तौर पर युवकों के, जीवन में नियम, तरतीब अनुशासन आयगा और फिर हम लोग आसानी के साथ डाकुओं और बीमारियों का सामना कर सकेंगे और गांव की उन्नति के किसी भी काम को दृढ़ता पूर्वक बढ़ा सकेंगे।

बालाराम—ठीक है। यदि रुपए की ज़रूरत पड़े तो मैं देने में आगा पीछा न सोचूँगा।

सोमेश्वर—*(उठते हुए)* सो तो आपसे गांव भर को आशा है। मैं यही कहने आया था।

बालाराम—ज़रा बैठो। कितना रुपया चाहना पड़ेगा? कुछ अनुमान कर सकते हो?

सोमेश्वर—अभी तो दादा, कुछ नहीं कह सकता। समय आने पर विनय करूंगा।

बालाराम—आनन्द का एक अवसर आने वाला है। चम्पी की सगाई और फलदान होने वाला है। उस मौक़े पर और ब्याह पर बहुत कुछ देना चाहता हूँ।

(सोमेश्वर के चेहरे पर यकायक उतार चढ़ाव होता है। उसका गला रुंध जाता है)

सोमेश्वर—*(कुर्सी के डंडे पर थमकर, सिर नीचा किए हुए)* जी दादा?

बालाराम—हां, ललितपुर में सम्बन्ध हो रहा है।

(सोमेश्वर कुर्सी के डंडे को हाथ के नाखून से कुरेदता है)

सोमेश्वर—जी दादा?

बालाराम—घर बड़ा है। लड़का अच्छा है।

(सोमेश्वर सिर नीचा किए रहता है)

सोमेश्वर—कब दादा?

बालाराम—जवारों के दिन। वह दिन शुभ है।

सोमेश्वर—वह सुखी रहेगी? दादा........

बालाराम—हां, बिलकुल।

सोमेश्वर—आपने निश्चय कर लिया?

बालाराम—हां, बिलकुल।

सोमेश्वर—तब मुझको कहना ही क्या है?

(सोमेश्वर नीचा सिर किए हुए चला जाता है)

(भीतर से मेघराज का प्रवेश। पीछे पीछे चम्पा आ रही है; परन्तु आड़ के कारण बालाराम उसको नहीं देख पाता।)

बालाराम—मेघराज, दशहरे के बाद के लिए निश्चय को नहीं टालूंगा मैं। इसी नवमी को जवारों के दिन, ललितपुर जाकर सगाई फलदान करे आता हूँ। अधिक नहीं ठहरूंगा।

(चम्पा धक्का सा खाकर पीछे हट जाती है)

मेघराज—दादा, मेरे निवेदन पर आपको ध्यान देना चाहिए।

बालाराम—मैंने खूब सोच समझ लिया मेघराज। मेरा निश्चय अटल है। मैं अपनी बेटी को भुक्खड़ों के घर में नहीं फेकूंगा।

मेघराज—क्या बहिन इस सम्बन्ध से सुखी होगी?

(चम्पा 'हिश!' करके भीतर चली जाती है)

बालाराम—इस लड़की का मैं मां और बाप दोनों हूं। मैं उसके सुख की बात को ज्यादा अच्छी तरह जानता और समझता हूँ। यह 'हिश' किसने किया?

मेघराज—चम्पी मेरे पीछे खड़ी थी। मैंने उसको देखा न था।

बालाराम—अब देख लिया तुमने कितनी आज्ञाकारिणी और समझदार है वह ? यह 'हिश' उसने किसकी बात पर किया ?

मेघराज—(उदास स्वर में) मेरी बात पर दादा। और मैं कह ही क्या सकता हूं ?

दूसरा दृश्य

[स्थान—बाँसी गांव की बाहर की सड़क जो नाले के पुल के लिए गई है। समय संध्या के पूर्व। स्त्रियाँ और लड़कियाँ रंग बिरंगे कपड़े पहिने सिर पर जवारे रक्खे गाती हुई चली आ रही हैं। उनके बीच में कुछ स्त्रियाँ सिर पर थालों मे घी के दीपक जलाए हुए हैं। पुरुष साँगें और त्रिशूल लिए हुए उछलते कूदते उनके आगे हैं। स्त्रियों के गायन के साथ पखावज बज रही है। सारंगी वाले भी संग में हैं। लड़कों का एक अखाड़ा पीछे पीछे आ रहा है। लड़के तलवार, गदकाफरी और बनैती इत्यादि का प्रदर्शन करते हुए चले आ रहे हैं। अखाड़े के साथ मेघराज है।]

(स्त्रियों का गीत)

कौन ने पाले मैया हरियल सुअना, कौन ने पपीहा और मोर।
बादर गरजै घनघोर,
बिजरी चमके चहुं ओर,
जेठा तपै भारई बोलियो हे माय।
कौन ने पाले.....................

दुधुआ पिएँ माईके हरियल सुअना मोती चुनें पपीहा और मोर।
तीतुर बोलें बड़े भोर,
मेहा बरसै बड़ी जोर,
रामराम पंछी भजैं बोलियो, हे माय।
कौन ने पाले.........................

एक युवा—(*मेघराज से*) गुरू जी, आप कोई जादू का या सांप का खेल दिखलाइए।

मेघराज—(*मुस्कराकर*) वह तो, भैया, सब बांमो में समा गया। अब जीवन का सच्चा जादू इस अखाड़े को समझो और अपने को स्वस्थ और बलिष्ठ बनाकर गाव और देश की रक्षा नागराज बनकर करो। गदका-फरी का खेल दिखलाओ।

(*लड़के गदका-फरी का खेल दिखलाते हैं*)

[*यह जनसमूह धीरे धीरे तालाब की ओर जा रहा है। इस समूह के पीछे थोड़े से जंगली स्त्री-पुरुषों का स्वांग आता है। ये लोग अपना नृत्य दिखलाते हुए चले जाते हैं। इनके पीछे पढ़ी लिखी लड़कियों का एक छोटा सा समूह आता है। ये जवारों के दोने हाथ में लिए हैं। गाती चली आ रही हैं। उनमें चम्पा और करीमन भी हैं। चम्पा गा नहीं रही है। उदास है। करीमन खाली हाथ है—वह जवारे का दोना नहीं लिए है।*]

(*इस समूह का गीत*)

कौने पाले मैया...... ......इत्यादि

(*यह समूह भी तालाब की ओर चला जाता है*)

तीसरा दृश्य

[*स्थान—झाँसी के तालाब का बँध। समय-सूर्यास्त। स्त्रियां जल में जवारे सिरा रही हैं। जवारे खोंट खोंटकर गरी और बताशों के साथ स्त्री-पुरुष परस्पर बाँट रहे हैं—जवारो के लिए कजरियों का बन्धन नहीं है कि वे केवल भाई को ही दिए जायँ। सब लोगों के चले जाने पर एक कोने से चम्पा और करीमन का हाथ में जवारे लिए हुए प्रवेश।*]

चम्पा—मैं सोचती थी कि यहां कहीं मिल जाते तो उनको जवारे देकर फिर तालाब में यहीं कहीं सरक जाती।

करीमन—यह सब नासमझी की बात है।

चम्पा—करीमन, आज दादा मेरे भाग्य का निर्णय करने ललितपूर गए हैं। इसी समय वहां कुछ हो रहा होगा। मैं भी यहां क्यों न कुछ कर डालूँ?

करीमन—क्यों नहीं दादा से साफ़ साफ़ कह देती? परमात्मा के दिए हुए इस शरीर को यों ही नष्ट करने की बात सोचना ही पाप करना है।

चम्पा—कैसे कह दूँ करीमन? गांव के लोग कहेंगे कि बड़ी निर्लज्ज है। दादा से मैंने पिता और माता दोनों का अटूट प्यार पाया है। यदि खोलकर कुछ कहूंगी तो उनके प्यार का अपमान होगा।

करीमन—और, जिस परमात्मा ने अपने कौशल और प्यार से यह देह दी इसको फेंक देने से उसका बड़ा भारी सत्कार करोगी! मैं ऐसी स्थिति में होती तो जिससे कहना होता स्पष्ट कह डालती। ज़रा भी लाज-सङ्कोच न करती।

चम्पा—मैं अपने भीतर इतनी हिम्मत नहीं पा रही हूं। इसीलिए सहज सुलभ को अपनाने की बात बार बार मन में उठती है।

करीमन—मैं दादा से कहती, परन्तु तुमने हठपूर्वक मना किया। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। जैसे ही वे ललितपूर से लौटें मैं उनसे कह दूंगी।

चम्पा—क्या फ़ायदा करीमन? वे बहुत हठी हैं। नहीं मानेंगे। मेघराज भैया ने समझाया था। वे नहीं माने।

करीमन—तुम्हीं ने तो 'हिश' करके उनके भ्रम को पक्का किया। कहा था न तुमने 'हिश'? बोलो। तुमने मुझको उसी दिन बतला दिया था। अब कहो किसका दोष है?

चम्पा—मेरी हर तरह मौत है। हिश न करती तो क्या कहती? दादा अपना निश्चय मेघराज भैया को पहले ही सुना चुके थे। इसीलिए मेरे मुँह से भैया की बात पर हिश निकल पड़ा था। मेरा दिल बैठा जा रहा है।

करीमन—सँभलो चम्पी, यह देश इसलिए स्वतंत्र नहीं हुआ है कि इसकी लड़कियां, इसकी कलियां, यों ही जलकर खाक हो जायँ। मैं देखती हूं कैसे उस ललितपूर वाले कोढ़ी पर तुमको क़ुरबान किया जाता है?

चम्पा—क्या करोगी बहिन, तुम?

करीमन—इस गांव के अलख को जगाऊँगी। बस्ती की आत्मा को चेताऊँगी।

चम्पा—(*निराशा के स्वर में*) कैसे?

करीमन—तुझको कुएँ में ढकेल कर।

चम्पा—(*फीकी मुस्कराहट के साथ*) यहीं न ढकेल दो इसी तालाब में?

करीमन—चल यहाँ से। पढ़ना-लिखना, सेवादल सब चूल्हे में डाल दिया डायन ने! चन्दू भैया से कहती हूँ। पञ्च-भवन आज़ाद हिन्दुस्थान की लड़की की पुकार से गूँज उठेगा। लड़के उस आवाज़ को पकड़ेंगे और अपने गले से नीचे उतारेंगे। परमात्मा के दिए हुए प्राण यों ही नहीं रौंदे जा सकते। चल।

(*पकड़ कर चम्पा को ले जाती है*)

चौथा दृश्य

[स्थान—बांसी बस्ती के बीच वाली सड़क के पुल की ओर जाने वाला सिरा। उस सिरे से कुछ बालकों और युवकों का गाते

हुए प्रवेश। पीछे पीछे चाँदखाँ और मेघराज। समय प्रभात। ये सब लोग नाले से स्नान करके बस्ती की ओर आ रहे हैं।]

(लड़कों का गायन)

गई रात आया प्रभात।
हुआ झंकरित भू का कन कन।
बोल रहा है खननन झननन।
अब न होयंगे कभी दास।
गई रात आया प्रभात।

(यह समाज गाता हुआ गाँव मे जाता है)

पांचवां दृश्य

[स्थान—झाँसी के बीच वाली सड़क। सड़क के ऊपर बालाराम इत्यादि के मकान। जलूस का गाते गाते प्रवेश। जलूस बालाराम के घर के सामने ठहर जाता है। करीमन किवाड़ खोलकर आगे दरवाज़े पर खड़ी हो जाती है और बालाराम अपनी खिड़की खोलता है। चाँदखाँ और मेघराज आड़ में छिप जाते हैं। समय वही प्रभात]

बालाराम—क्यों रे छोकरो, यह क्या दुन्द मचा रक्खा है? इतने सवेरे यहां क्यों इकट्ठे हुए हो?

एक लड़का—*(आगे बढ़कर)* दादा, हम दुन्दी नहीं हैं, स्वतन्त्र-भारत की दुन्दुभी हैं।

बालाराम—*(हँसकर)* अच्छा, अच्छा, मैं समझ गया। चन्दा लेने आए हो? बोहनी न बट्टा, ब्याज से रट्टा? बोलो बोलो क्या चाहिए? बोलो, मैं दूँगा।

वही लड़का—*(हाथ जोड़कर)* बदलिएगा नहीं दादा। जो मांगे सो पावें।

बालाराम—(*मुस्कराकर*) क्या बकता है रे ? बोल क्या चाहिए ?

वही लड़का—हम लोगों की बहिन चम्पा का ब्याह उस ललितपूर वाले कोढ़ी के साथ मत करिए !

बालाराम—क्या ! कोढ़ी !!

वही लड़का—बिलकुल कोढ़ी, दादा ! ऊपर चाहे जैसा हो, भीतर भीतर वह हम लोगों के लिए कोढ़ी ही है ।

बालाराम—(*क्रुद्ध स्वर में*) क्या बकते हो मूर्खो ?

(*मेघराज आड़ से करीमन को संकेत करता है । करीमन बालाराम के द्वार पर आती है*)

करीमन—दादा, किवाड़ खोलिए । मुझे कुछ कहना है (*लड़कों से*) तुम लोग जाओ ।

(*लड़के चाँदखाँ और मेघराज का संकेत पाकर गाते गाते एक ओर जाते हैं । बालाराम किवाड़ खोल देता है । करीमन उसकी पौर मे चली जाती है*)

करीमन—मैं आपको पिता के समान समझती हूँ । आपकी गोदी में खेली हूँ, इसलिए मुझको कुछ कहने का और मांगने का हक़ है ।

बालाराम—तू क्या मांगने आई है करीमन ?

करीमन—केवल एक भीख—ललितपूर वाले लड़के की सगाई छोड़ दीजिए ।

बालाराम—मै वचन दे चुका हूँ, बेटी । जाति में मेरी बहुत हेटी होगी । मुँह न दिखला सकूँगा । लोग मेरे ऊपर थूकेंगे ।

करीमन—जाति वाले कुछ नहीं कहेंगे, दादा । गांव के सजातीय लड़के के साथ ही तो सम्बन्ध होना है ।

बालाराम—मैं जीते जी तो ऐसा नहीं कर सकता करीमन । अपनी बात कैसे बिगाड़ूं ?

करीमन—तो आप मेरी बहिन चम्पी को मारडालना चाहते हैं ? सोमू भैया गरीब हैं तो क्या हुआ ? उनके पास हाथ पैर बुद्धि तो है।

बालाराम—करीमन, तू अभी निरी बच्ची है। अबोध है। समाज को नहीं जानती है और न संसार को।

(मेघराज का यकायक प्रवेश)

मेघराज—मैं तो जानता हूं, दादा संसार को और समाज को। यदि आप मेरी इस बहिन को भीख नहीं देते हैं तो मुझको तो देनी ही पड़ेगी।

बालाराम—यह सब क्या षड़यन्त्र है ?

(पीछे एक कोने में चम्पा सिसक रही है)

मेघराज—मैं भीख नहीं मांगता। मैं तो अपना दावा पेश करता हूं।

बालाराम—*(चम्पा के सिसकने की ओर ध्यान लगाते हुए)* क्या ?

मेघराज—मैंने आपको डाकुओं से बचाया था। उसका पुरस्कार चाहता हूं।

बालाराम—*(चम्पा की सिसक की ओर ध्यान लगाए हुए है उसका निश्चय ढीला पड़ता है)* क्या ?

मेघराज—मेरी बहिन का ललितपूर वाला संबन्ध तोड़िए और सोमेश्वर जी के साथ जोड़िए। बस यह पुरस्कार चाहता हूँ। और कुछ नहीं चाहिए।

बालाराम—*(शिथिल स्वर में)* मैं बड़े धर्म संकट में पड़ गया हूँ मेघराज !

मेघराज—ज़रा भी नहीं।

बालाराम—तुम क्या जानो।

(चम्पा की सिसक फिर सुनाई पड़ती है)

मेघराज मैं सब जानता हूँ। मेरी बन्दूक जानती है।

बालाराम--(*अचरज और भय के साथ*) कैसे? क्या?

मेघराज—ऐसे--बाम्बी के भीतर गया हुआ सांप और मेघराज सपेरा फिर बाहर निकलेगा और वह देखेगा कैसे कोई उसकी बहिन को उसकी इच्छा के खिलाफ ब्याह किए जाता है?

बालाराम—(*सोचते हुए*) क्या करूं कुछ समझ में नहीं आता।

मेघराज—आपको दादा कुछ नहीं दिखलाई पड़ रहा है? (*ज़रा ऊँचे स्वर में*) कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा है?

बालाराम—(*निश्चय के स्वर में*) अच्छा बोलो कि किस तरह ये झंझट कटे?

मेघराज—अभी ललितपूर वाले को चिट्ठी लिखिए कि सम्बन्ध आगे नहीं चल सकेगा, तोड़ दिया गया। मैं दौड़ कर डाकघर जाता हूँ और बंबे में चिट्ठी डाले आता हूँ।

(*बालाराम कुछ सोचने के उपरान्त चिट्ठी लिखता है*)

मेघराज—जो कुछ उन लोगों का खर्च पड़ा हो उसके देने की भी बात लिख दीजिए।

बालाराम— (*चिट्ठी लिखने के बाद*) मेरा भी तो खर्च हुआ है।

करीमन—लिख दीजिए, दादा। झंझट नहीं बढ़ेगा।

बालाराम—एक बात तेरी भी मानूँगा, करीमन।

(*लिखता है और लिफाफे पर पता लिखकर उसमें चिट्ठी को बन्द कर देता है*)

करीमन--दादा, मैंने अपनी भीख पाली।

मेघराज--(*चिट्ठी जल्दी से लेकर और पता पढ़ कर*) और मैंने अपना दावा पा लिया।

(चाँदख़ाँ का प्रवेश)

चाँदख़ाँ—मैंने भी सुन लिया दादा। आपने बहुत अच्छा किया। आप बड़े हैं।

(करीमन भीतर चली जाती है)

बालाराम—(*मुस्कराकर*) अरे चन्दुआ, चन्दुआ, तुझमें बड़े गुन हैं।

चाँदख़ाँ—(*नीचा सिर करके मुस्कराता हुआ*) मैंने क्या किया दादा?

बालाराम—यह प्रभात फेरी तेरी ही रचना है। खैर जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। मेरे कोई लड़का नहीं है। मैं सोमू को ही लड़का समझूँगा। मुझको भ्रम था, वह साफ हो गया है। जाओ मेघराज, खड़े क्यों हो? डाकघर में चिट्ठी डाल आओ।

(मेघराज जाता है)

चाँदख़ाँ—दादा, आपने अपनी जिन्दगी में जितने बड़े काम किए हैं उनमें सबसे बड़ा यही होगा।

बालाराम—चन्दू, मैं चम्पी की मां भी हूँ।

छठवां दृश्य

[स्थान बांसी के आगे नाले का पुल। एक ओर से एक वृद्ध पथिक का प्रवेश और दूसरी ओरसे चाँदख़ाँ तथा सोमेश्वर का। वह पथिक नाले की ओर जाता है। समय एक पहर दिन चढ़े उपरान्त]

सोमेश्वर—मैं दिल्ली, कानपूर या बम्बई चला जाऊँगा। वहां से काफ़ी रुपया कमा कर ही लौटूँगा, तब दादा के मन में मेरे लिए सच्चा आदर उत्पन्न होगा।

चाँदख़ाँ—परन्तु जानते हो वहां से कितना गवां कर लौटोगे? उसका परता लगाया?

सोमेश्वर—गरीबी बड़ा भारी अभिशाप है चन्दू भैया।

चाँदखाँ—मैं दौलत को बड़ा भारी अभिशाप समझता हूं सोमू। यह पञ्च-भवन, वह सहयोग समिति, ग्राम संगठन, सेवादल और एक दूसरे का परस्पर घना परिचय शहरों में कहां मिलेगा? जो तन्त्र हमको गांव में अपना एक छोटा सा राज देता है वह हमको शहरों में क्या दे सकता है? और अपनी ज़रूरतों से अधिक रुपया कमा कर जोड़ने की हविस तो आदमी को गिराती है, उठाती नहीं है।

सोमेश्वर—तब मैं दादा का रुपया नहीं लूँगा और न उनका घर जमाई बनूँगा।

चाँदखाँ—यह आगे की बात है और परस्थितियों के अधीन है।

(वह पथिक इन लोगों के पास आता है)

पथिक—आप लोग क्या इसी गांव के रहने वाले हैं?

सोमेश्वर—जी हां। क्यों?

पथिक—आपके गांव में बड़ा अन्धेर है, बालाराम तो एक बड़े आदमी हैं न?

चाँदखाँ—हां, हां। फिर?

पथिक—उन्होंने अपनी लड़की का सम्बन्ध ललितपूर में पक्का करके फिर तोड़ दिया! यह तो बहुत अनुचित किया। ऐसा कहीं होता है?

चाँदखाँ—खूब होता है और खूब होगा। लड़की की इच्छा के प्रतिकूल सगाई सम्बन्ध कैसा?

पथिक—लड़की की भी कोई इच्छा होती है?

चाँदखाँ—क्यों लड़की क्या भेड़ बकरी है?

पथिक—ललितपुर वाला मुकदमा लड़ेगा।

चांदखाँ—मुक़द्दमा लड़ना हम लोग भी जानते हैं। यह मुक़द्दमा जायगा तो आखिर पञ्चायत ही में न ! आप कौन हैं ?

पथिक—मैं लड़के वाले का कोई न कोई हूँ। बालाराम ने लड़के को कोढ़ी बतलाकर सम्बन्ध तोड़ा है। मामला संगीन है !

चाँदखाँ कोढ़ी उन्होंने तो नहीं कहा—गांव के छोकरों ने ज़रूर कहा। उनपर करे कोई दावा तो आटा दाल का भाव पड़े मालूम।

पथिक—खैर झगड़ा नहीं बढ़ना चाहिए। मानहानि के बदले में लड़के वाले को कुछ रुपया और मिलना चाहिए।

चाँदखाँ—यह बात चिट्ठी डालकर तै कर लेना, क्योंकि हमारा गांव बहुत कड़वा है। ज़बानी चांय चाय करने में झमेला बढ़ेगा। (*मेघराज का प्रवेश*) लीजिए गांव का एक बड़ा झगड़ालू तो यह आ गया।

(*पथिक उसके पुष्ट शरीर को देखता है*)

चाँदखाँ—यह डाकू है, पक्का पूरा डाकू। (*हँसकर*) और हम सब इसके साथी हैं।

पथिक—(*सकपकाकर*) खैर, कोई बात नहीं। तै हो जायगा—चिट्ठी डाल कर तै कर किया जायगा। इसीलिए मैंने गांव में चर्चा नहीं की। ललितपूर जाकर तै करवा दूंगा।

(*प्रस्थान*)

मेघराज—क्या बात थी ? यह कौन था ?

चाँदखां—हमको तो ललितपूर वाले छोड़े हुए लड़के का बाप सा दिखता था, फिर जो कोई हो। सगाई तोड़ने के ऊपर मामला चलाने की धमकी देता था। असल में चाहता था उसकी ओट में कुछ और रुपया झटकना।

मेघराज—ऐसी हालत में मैं वास्तव में डाकू हो सकता हूँ।

सोमेश्वर—कोई बात नहीं मेघराज भैया।

मेघराज—सायत आ गई है। उसी को बतलाने के लिए ढूंढ़ता ढांढ़ता मैं यहां आ गया। परसों लगन है। मैं एक बार और अन्तिम बार, अपना कुछ जादू फिर दिखलाऊंगा।

चाँदख़ाँ—लगुन के दिन?

मेघराज—नहीं विवाह के दिन।

चाँदख़ाँ—वही, बन्दूक़ों वाला घिस्सा दोगे?

सोमेश्वर—या कोई और चरका?

मेघराज—(हँसकर) नहीं, नहीं वह सब कुछ नहीं होगा।

सातवां दृश्य

[स्थान—झांसी में बालाराम का सड़क पर घर। तोरण और वन्दनवारों से दरवाज़ा सजा हुआ है। समय सन्ध्या का। अच्छी रोशनी होरही है। नेपथ्यमे शहनाई बज रही है। बरात आने वाली है। दरवाज़े के दोनों कोरो पर स्त्रियां पीतल के मंगल कलश सिर पर रक्खे हैं, जिन पर दिए जल रहे हैं। सामने पौर में चम्पा शृंगार किए बैठी है। उसके पास करीमन है। दरवाज़े पर ज़रा आगे बालाराम और चांदख़ां हैं। उनके पास ही नाई सजधज में खड़ा है। एक ओर से बरात आती है। आगे आगे दूल्हा वेश में सोमेश्वर, पीछे पीछे सेवा दल के लड़के।]

(*स्त्रियां गाती हैं*)

(राग तिलक कामोद)

कोट नवै पर्वत नवै जब साजन आएँ,
माथो हिमाचलजू को तब नवै जब साजन आएँ।
कोट नवें पर्वत नवें सिर नवन न आवें,
बालारामजू को माथो तब नवै जब साजन आवें॥

(लड़के गाते हैं)

गई रात आया प्रभात।

हुआ झंकरित भू का कन कन,
बोल रहा है खननन झननन,
अब न होयेंगे कभी दास,
गई रात आया प्रभात।

[सोमेश्वर और बराती बालाराम के दरवाजे पर आते हैं। बालाराम टीका करने के लिए थाल लेकर बढ़ता है। उसी समय महुअर बजाते हुए सपेरे के वेश में मेघराज का प्रवेश। परन्तु वह पेटी या बेंगी नहीं लिए है। केवल एक कन्धे पर गेरुआ रंग का झोला डाले है। उसको देखते ही सोमेश्वर मुस्कराता है और उस मुस्कराहट में चम्पा को देखता है। चम्पा भी मुस्करा जाती है। सोमेश्वर के बराती लड़के हँस पड़ते हैं।]

एक लड़का—गुरू जी, कोई जादू दिखलाइए, जादू गुरूजी।

नाई—अहाहा ! पेटी और होती तो क्या बात थी। उस नाले के किनारे देखकर मैं डर गया था और आज आनन्द के मारे कांप रहा हूँ।

एक लड़का—गुरू जी, जादू।

मेघराज—*(महुअर बाजेको झोले में डालकर और झोले में से ग्यारह रुपए निकालकर)* भाइयो, जादू वादू तो सब बामी में समा गया। उसमें से केवल सपेरा निकल पाया। सपेरे का जो कुछ जादू है वह उसका अखाड़ा और तुम लोग हो, और हमारे देश के भी जादू तुम्हीं लोग हो। *(बालाराम से)* यह थाल मुझको दीजिए। मेरी बहिन का विवाह है। दूल्हा को टीका मैं करूँगा।

(बालाराम गद्गद होकर थाल मेघराज के हाथ में दे देता है। मेघराज थाल में अपने ग्यारह रुपए रखकर सोमेश्वर को टीका करता है।)

मेघराज—(*थाल चांदखां के हाथ में देकर, बालाराम की ओर हाथ जोड़कर*) चम्पा के भाई की यह थोड़े दिन की कमाई है, दादा। परन्तु राखी के बन्धन से उऋण वह कभी न हो सकेगा।

चम्पा—(*कम्पित स्वर में धीरे से*) मेरे भैया!

(*सोमेश्वर मेघराज से लिपट जाता है, शहनाई बजती है। साथ ही धीरे धीरे यवनिका गिरती है।*)

। इति ।

वर्मा जी की अनुपम कृति जो युग-युग तक हिन्दी में सौरभ, प्राण और ओज बनाये रहेगी।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई।

हिन्दी उपन्यासों में सर्वथा सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ जिसका मराठी, गुजराती, सिंधी, तैलगू तथा उर्दू में अनुवाद हो रहा है।

❋ कुछ सम्मतियां ❋

(१) प्रयाग विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वाइस-चान्सलर पब्लिक सर्विस कमीशन के चेयरमैन डा० श्री अमरनाथ जी झा— "झांसी की रानी मैंने आद्योपांत पढ़ी और उससे बहुत प्रभावित हुआ। ऐतिहासिक उपन्यासों में इसका सर्वोच्च स्थान है। अनुसन्धान में बहुत परिश्रम लगा होगा। बातचीत की भाषा स्वाभाविक और अकृतिम है। चरित्र-चित्रण में तो श्री वृन्दावनलाल जी सिद्धहस्त हैं।"

(२) श्री मैथिलीशरण जी गुप्त— "इस उपन्यास के रूप में मेरे बन्धु ने महारानी का ऐसा स्मारक बनाया है जो कि स्थान विशेष पर नहीं प्रत्येक घर में प्रतिष्ठित हो सकता है। पराधीनता को स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करने वाली अपनी इस स्वाधीनता की सजीव मूर्ति के दर्शनार्थ मैं प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता हूँ।"

(३) दानवीर घनश्यामदास जी बिड़ला— "जितने हिन्दी के उपन्यास मैंने पढ़े हैं उनमें यह सर्वोच्चकोटि का है।"

(४) श्री रामकुमार वर्मा एम०ए०पी०एच०डी० प्रयाग विश्वविद्यालय "झांसी की रानी उपन्यास आंखें गड़ा गड़ा कर पढ़ा। यह ऐसा रुचा कि खाने पीने तक की भी सुधि न रही। ऐतिहासिक तथ्य और कल्पना के सम्मिश्रण से यह उपन्यास ऐसा रुचा है कि आंखों के सामने तस्वीर सी खींच दी है। लक्ष्मीबाई पढ़के पहिले तो बाहें फड़कने लगीं, फिर आंखों से नीर बहने लगा।"

Under Translation Into Marathi, Gujrati, Telgu, Sindhi and Urdu

Some Opinions.

Amrit Bazar Patrika:— Indeed one sometimes begins to feel embarrased when one thinks that many sister languages of our National language can throw a serious challange to Hindi in the field of fiction. Happily Mr Vrindawan Lal Varma has been keeping the banner high in fiction for a long time now Jhansi-ki-Rani Laxmi bai may well be the crowning glory of the author's work in the field of literature No literature in India has such a valuable contribution in the field of fiction. It will be a lasting tribute to Mr Varma's craft as a historical novelist.

N. C. Mehta Retired I. C. S. The great Art Critic of India:—I have found Jhansi-ki Rani Laxmibai exceedingly well written

Doctor Shyama Prasad Mukerji Ex-President Hindu Mahasabha:— A grand theme handled in a remarkable manner.

Sind Observer.—The best historical novel so far composed in Hindi. The book makes a fascinating reading and would compare favourably with the best historical novels by European authors

Independent Nagpur:—The book deserves to be translated into all ndian languages as well as in English. It is an excellent theme for filming also. Shriyut Vrindabanlal Varma has rendered unique service to Hindi literature. We owe him a debt of gratitude for giving us such a powerful book. He has rendered a great service to the country by presenting the glorious saga of the Ranee in the form of a story. It is a brilliant novel. The language is simple and effective and the interest of the reader never flags. The characters are living and powerful. The women characters are particularity powerful.

Hitvada:—Liveliness is maintained throughout.

PRICE RS. 6.

MAYOOR PRAKASHAN :--Swadhin Press, Jhansi

'कर्मवीर' खंडवा इतने असाधारण ढंग से यह ग्रन्थ लिखा गया है कि एक बार प्रारम्भ करके समाप्त करने पर ही पाठक छोड़ेगा। अभी अभी हाल की जितनी पुस्तकें निकली हैं उनमें 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' का सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ स्थान है। यह घर-घर, हर पुस्तकालय और हर शिक्षालय में पढ़ी जानी चाहिये।

'हंस' (मासिक) – इतिहास का इतना गहरा अध्ययन, इतने, परिश्रम और उदार विचार, इतनी ओजपूर्ण और प्रभावोत्पादक शैली, भाषा पर इतना अच्छा अधिकार और फिर इतना उच्च आदर्श चरित्र लेकर लिखा हुआ यह उपन्यास हर दृष्टि से स्तुत्य है।

'हिन्दुस्तान' दिल्ली—१४ वर्षा के अन्वेषण के बाद लिखित इस उपन्यास में उसने चार चाँद लगा दिए हैं–उपन्यास पढ़ने में रोचक प्राण-प्रद और प्रेरक है। प्रस्तुत पुस्तक गढ़-कुंडार आदि सब से बढ़कर है।

'स्वतन्त्र' झाँसी—५०० से अधिक पृष्ठ के इस वृहद ग्रन्थ में सर्वत्र रसमयता, सरलता, सुगमता, उदात्त राष्ट्रीयता और शोध का प्लावन है। काव्य में वैसे सुन्दरम् ही की आराधना विशिष्ट होती है। इसमें सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का सर्वतोभद्र समन्वय है। इस ग्रन्थ को समग्र पढ़ कर भी जो अपनी आंखों को सूखा और गले को साफ रख सकें उन्हें या तो पूर्ण स्थितप्रज्ञ ही कहना पड़ेगा या फिर हृदयहीन पाषाण। कट्टर रूढ़िवादी भी इसे उसी भाँति निश्शंकता से अपने घर की महिलाओं को दे सकते हैं जैसे रामायण और महाभारत को।

'लहर'–उपन्यास इतना मनोमुग्धकारी, उत्फुल्लकारी तथा भावपूर्ण है कि हिन्दी ही नहीं, अन्य प्रांतीय भाषाओं में भी इसकी जोड़ की रचना कठिनाई से मिलेगी। श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने अनेक वर्षों के परिश्रम से लक्ष्मीबाई के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्यों तथा जनश्रुतियों का संकलन करके कथानक तैयार किया है।

'विश्व भारती' शांति निकेतन, "हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में वर्मा जी अग्रगण्य हैं। यह पुस्तक भी उनकी बहुमूल्य कृतियों में एक है।"

लेखक ने उनकी नीति निपुणता (स्त्री) सेना का निर्माण, उनके अद्भुत शौर्य का ऐसा ओजपूर्ण चित्रण किया है कि हृदय मुग्ध रह जाता है।

हम अपने प्रत्येक पाठक से सिफारिश करेंगे कि वह किसी भी प्रकार इस उपन्यास को हस्तगत कर अवश्य ही पढ़े। शिक्षावेत्ताओं का ध्यान भी इस उपन्यास की ओर जाना चाहिए। नवराष्ट्र निर्माण के लिए ऐसे ही उपन्यास पाठ्य-क्रम में रखे जाने के योग्य हैं।

Spark:—This is a truly national theme, also the grandest subject for Hindu Muslim Unity.

New Light: – Jhansi-ki-Rani Laxmibai is (without exaggeration) inspiring, nation-building, nerve tingling thrilling, and appealing to every Indian.

अचल मेरा कोई

लेखक—

श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, अभूतपूर्व, अतिरोचक सामाजिक रोमान्स प्रेस में है।

सितम्बर तक प्रकाशित होगा } **मयूर-प्रकाशन झांसी** { मूल्य ३।)

स्वाधीन प्रेस, झांसी।

हमारे अन्य प्रकाशन
श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा
—: की :—
अमर लेखनी द्वारा प्रणीत

कचनार— (ऐतिहासिक उपन्यास)

विन्ध्यखण्ड की घाटियों में दबी हुई अनेक भव्य गाथाओं में से एक। सर्वत्र मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का विकसित स्वरूप। भाषा-सौष्ठव, इतिहास, तथ्य और कल्पना का अनूठा समन्वय —

सजिल्द— पृष्ठ—४२० मूल्य ४॥)

मुसाहिबजू— (ऐतिहासिक उपन्यास)

उस युग की एक बात, जब भारतीय सामंतवाद आतंकवाद के धरातल पर उतर रहा था। महलों के झरोखों से भी वेदना की गर्म श्वासें निकला करती थीं। भड़कीले गहनों और कपड़ों में लिपटी रानियों के अन्तर भी तड़पन और टीस से दबे रहते थे—और वह भी आर्थिक—हीनता से सनी। बड़ा ही उथल पुथल पूर्ण कथानक है। फिर वर्मा जी की वर्णन शैली। पृष्ठ—१३० मूल्य १॥)

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई— (ऐतिहासिक उपन्यास)

इतिहास की अपूर्व खोज। पिछले पृष्ठों में पर्याप्त पढ़ चुके हैं।

सचित्र सजिल्द— पृष्ठ—५२५ मूल्य ६)

फूलों की बोली— (सामाजिक नाटक)

स्वर्ण मोह—जनित, स्वर्ण—रसायन की क्रिया किसी समय में ऐसा रोग रहा है, जो मानव हृदय की एक भयंकर भूल बनकर हमारे समाज में वर्षों तक सना रहा। समझे—सुलझे व्यक्ति तक इस द्विविधा में लुट गये हैं। अब भी इसका अवशिष्ट किसी न किसी रूप में बना हुआ है। इस नाटक में स्वर्ण मोह की विडम्बना का अच्छा चित्रण है। नारी-हृदय वेश्या में से भी झांकता है मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। मूल्य १)

राखी की लाज (सामाजिक नाटक)

नाम से ही विषय स्पष्ट है। सजीव सम्वाद और रोचकता इस नाटक की विशेषता है। मूल्य १)

बांस की मार सही जा सकती है, परंतु बांस की फांस की कसक नहीं सही जाती। अति रोचक। मूल्य १)

लो, भाई पंचो! लो!! (एकांकी नाटक)

गावों में परमेश्वर के स्वरूप माने जाते हैं पंच और पंचायत, 'चतुरानन का दरबार' उनके अंचल में न्याय की पराकाष्ठा भी रहती है और दंभ भी। इस दिशा पर इस एकांकी में अच्छा व्यंग किया गया है। रोचकता से तो भरा पूरा है। मूल्य ।।।)

कोई समय था जब हमारे रंगमंच अटपटी हुंकारों से भरे संवादों से शोभित होते थे। अब इस स्वाधीनता के युगमें हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है विस्तृत प्रणाली से जनता की रुचिका परिमार्जन। और इस कार्य मे वर्मा जी द्वारा लिखित नाटक अपूर्व हैं। ललित, साहित्यिक, रोचक और प्रभाव पूर्ण होने के साथ-साथ यह नाटक रंगमंच पर सुगमता पूर्वक अभिनय करने योग्य हैं।

※ ग्रन्थकार की अन्य रचनायें ※

—: *प्रकाशित* :—

गढ़ कुण्डार (ऐति०-उपन्यास)	४)	★धीरे-धीरे-(व्यंग) मूल्य	१)
विराटा की पद्मिनी ,,	४)	★प्रत्यागत (सामाजिक-उपन्यास)	१।।)
कुण्डली चक्र सामाजिक ,,	२)	★प्रेम की भेंट ,,	१।।)
सङ्गम ,,	२)	★कभी न कभी ,,	२।)
लगन (अपूर्व रोमांस) ,,	१)	★हृदय की हिलोर (गद्यात्मक)	१)

—: *शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं* :—

आनंदघन (ऐतिहासिक-उपन्यास)	★मङ्गल सूत्र	नाटक
सत्तरह सौ इकत्तीस ,,	★झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	,,
महादजी सिंधिया ,,	★कब तक	,,
राणा सांगा ,,	★नील कण्ठ	,,
अनल मेरा कोई सामाजिक-उपन्यास	★पीले हाथ तथा अन्य एकांकी नाटक	
हंस-मयूर नाटक	★कलाकार का दण्ड (कहानियां)	
पायल ,,	★दबे पांव (शिकारी कहानियां)	

'मयूर-प्रकाशन' झांसी।